ISSN 2395 - 6267

विद्या भारती प्रदीपिका

वर्ष 39 अंक 2
कुल पृष्ठ 72

जनवरी से मार्च-2019 | मूल्य - ₹ 35/- | पौष से फाल्गुन, युगाब्द 5119

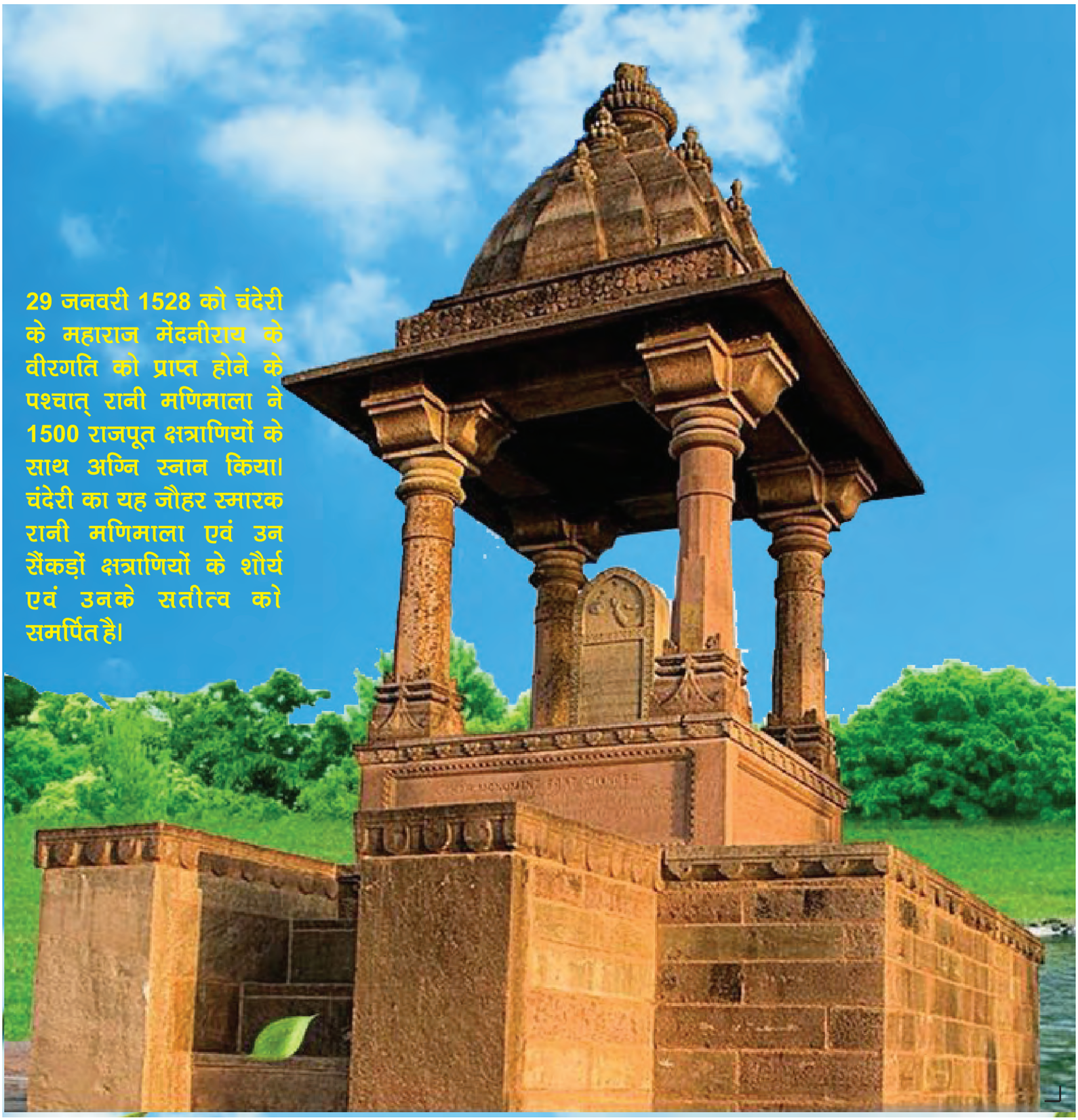

29 जनवरी 1528 को चंदेरी के महाराज मेंदनीराय के वीरगति को प्राप्त होने के पश्चात् रानी मणिमाला ने 1500 राजपूत क्षत्राणियों के साथ अग्नि स्नान किया। चंदेरी का यह जौहर स्मारक रानी मणिमाला एवं उन सैंकड़ों क्षत्राणियों के शौर्य एवं उनके सतीत्व को समर्पित है।

Mahashya Chunni Lal Saraswati Bal Mandir

Sr. Sec. School, L Block, Hari Nagar, New Delhi -110064

Our labs & Medical Centre

...Our Strength and strategic Dimensions...

"Education is not the learning of facts but the training of the mind to think"

* MCL- A unique combination of progressive, dynamic and scientific approach with high vaiues of Indian culture.
* Use of Sophisticated Latest Scientific Technology.
* Optimum effort to ignite students potential.
* A dynamic Teacher Conclave.
* To promote world class standards in vision as well as infrastructure.
* Appreciation of parental and community involvement in the school.
* To chistel the students for the stiff competition & challenges of Modern Living.
* All streams Science, Commerce and humanities are Available for class XI and XII.
* Providing well planned Co-Curricular activities as Yog Music, Dance, Art & Craft, Home Science, Sports for all round development of students.
* CCTV Surveliance.
* First School under Vidya Bharti trapping 'Solar Energy'.
* Scholarship (PRERNA) for outstanding students.
* I.T. Dept for keeping record of students and homework via SMS.
* A big Digital Library--- Storehouse of Knowledge.
* ALT Labs (ATAL TINKERING LAB) to develop scientific skills among students for adopting ROBOTICS.

G. L. T. Saraswati Bal Mandir

Mahatma Gandhi Road(Ring Road) Nehru Nagar, New Delhi-110065
Phone No.-011-20886188, 20886524 email-gltsbm1971@gmail.com
website -www.gltsbm.org.in

THE TRAILBLAZERS...

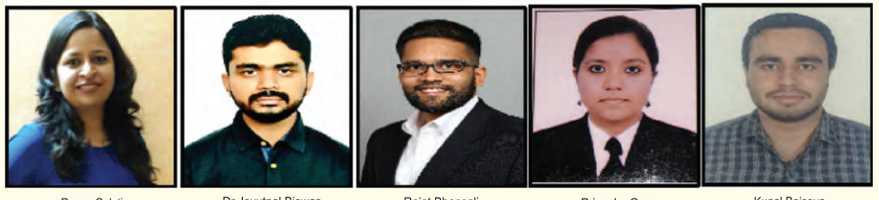

Reena Gulati
B.Com. (H), FCA, FCS
Gold Medalist Chartered
Accountant Partner at VSD & Associates

Dr Joyutpal Biswas
Sr. Resident Doctor,
Department of Radiology,
Safdarjung Hospital

Rajat Bhansali
Hyderabad (Telangana)
CPA (Rank # 1) Senior Manager,
Deloitte New York, USA

Priyanka Garg
Advocate
Supreme Court of India
Counsel for SDMC

Kunal Baisoya
BHMS Homeopathy
Nehru Homoeopathic Medical college
and hospital Delhi university

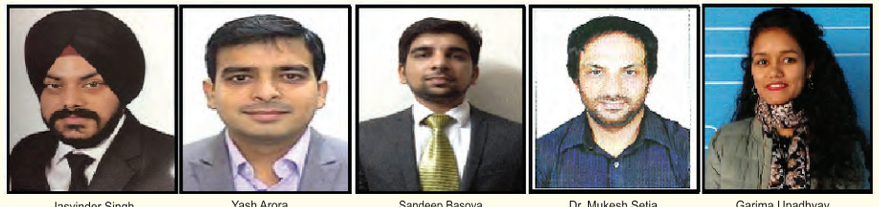

Jasvinder Singh
CPA, Chartered Accountant
Assistant Manager KPMG
York U.S.A.

Yash Arora
Environmental Specialist
International Finance
Corporation (World Bank)

Sandeep Basoya
B.Com. (Hons), CA, CAIIB, MBFICA
Senior Manager Punjab National Bank

Dr. Mukesh Setia
Founder Director - AVTE
Professional Doctorate in
Management

Garima Upadhyay
Analog Design Engineer
Airbus Operations, Toulouse

Geetu Chakraborty
B.Com Hons., CS, PGDBM
-Finance from Symbiosis Recruiting Manager,
Wells Fargo EGS Hyderabad

Nitin Sethi
Head- Treasury
Finance & Accounts Finance
Bridgestone India Private Limited

Vikrant Goyal
Master of International Commercial & Business Laws,
Additional standing counsel of Govt. of India and
South Delhi Municipal Corporation at Delhi High Court

Naveen Agarwal
MBA in Finance and
International Marketing
AVP with Kotak Mahindra Bank

Sachainder Arora
MBA in (Finance/Marketing) from Amity University,
BCA from GGSIP University
Assistant Manager with EY

Dr Sapna Khurana
Consultant Dental Surgeon

Nandita Vats
Asst.Vice President
Axis Bank

Kapil Sethi
Regional Head Institutional
& Project Sales

Kalka Rathore
Indian Army

Vibhor Kumar Singh
Indian Air Force

OUR ALUMNI WHO HAVE MADE US PROUD

OUR CORE STRENGTHS

Mindful and meaningful education imparted by our experienced and qualified faculty.
Innovative teaching pedagogies with focus on multiple intelligence.
Personalised learning that nurtures key attitudes, skills and knowledge.
Ensuring holistic development of the students through unparalleled sports education by specialized coaches.
Honing of communication, leadership and life skills.
Emphasising on inculcation of moral values and positive attitudes.
Exploring the realms of personal development of each child.

(RNI NO. 37111/1981)

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी के द्वारा विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए नक्षत्र आर्ट, बी-255, नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 (प्रेस) से मुद्रित एवं प्रज्ञा सदन, जी0एल0टी0 सरस्वती बाल मंदिर परिसर, एम0जी0 रोड, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित। **सम्पादक :** सविता कुलश्रेष्ठ

विद्या भारती प्रदीपिका

(आर0 एन0 आई0 पंजीकरण संख्या 37111/1981)

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका)

जनवरी से मार्च २०१९ | मूल्य ३५/-रु0 | पौष से फाल्गुन, युगाब्द ५११९

संरक्षक

डॉ० गोविन्द प्रसाद शर्मा

अध्यक्ष, विद्या भारती,

81, हैलीपैड कॉलोनी, जयविलास पैलेस, ग्वालियर, मध्य प्रदेश - 474002

मार्गदर्शक

डॉ० चाँद किरण सलूजा

प्रो० बी०पी० खण्डेलवाल

डॉ० ओम प्रकाश पाण्डेय

श्री अवनीश भटनागर

सम्पादक

सविता कुलश्रेष्ठ

एफ-81/यू०जी०-1,

दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली-110095

दूरभाष :-09560921486, 09599700662

ईमेल: savitakulshreshtha@gmail.com

प्रकाशन कार्यालय

प्रज्ञा सदन, गो०ला०त्रे० सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065

फोन न0-011-29840013, 29840126

ईमेल - vbpradeepika@yahoo.co.in

सदस्यता शुल्क प्रति पत्रिका -35/-रु0

वार्षिक सदस्यता शुल्क- 120/-रु0

दस वर्षीय सदस्यता शुल्क -800/-रु0

(शुल्क राशि 'विद्या भारती प्रदीपिका' के बचत खाता क्र0-1130307980 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्या IFSC - CBIN0283940 में जमा कर पत्र द्वारा कार्यालय को सूचित करें ।)

-: मुद्रण :-

नक्षत्र आर्ट, B-255, नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-I, नई दिल्ली - 110028

"प्रदीपिका" में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं। पत्रिका की इन से सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय		4
चंदेरी की महारानी मणिमाला का जौहर देखकर घबरा गया बाबर, उसकी चौथी बेगम हो गई थी बेहोश!	- संकलित	6
विद्या भारती के संरक्षक मा. ब्रह्मदेव शर्मा (भाई) जी से सम्पादक की वार्ता		11
सीमा शंखनाद	- श्री निशान्त मिश्रा	13
विद्यार्थी गुण पञ्चकम्	- श्री दिलीप बसंत बेतकेकर	14
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के अध्यक्ष मा. दीनानाथ बत्रा से वार्ता के अंश		16
कौशल का महत्त्व	- श्री जैन पाल जैन	17
कैसा प्रजातन्त्र!!!	- श्रीमती सविता कुलश्रेष्ठ	19
पूर्व महामंत्री मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल से सम्पादक की वार्ता		20
ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षण विधियाँ	- डॉ. गुज्जरमल्ल वर्मा	24
नाराज़ गूगल	- श्रीमती इन्दु सुन्दरी गोयल	26
योग शिक्षा का महत्त्व	- श्रद्धेय लज्जाराम तोमर	27
भारतीय नारी सम्पूर्ण विश्व की मार्गदर्शिका बनने योग्य है- डॉ. शरद रेणु		30
शिक्षा द्वारा अखंडता-समर्थता-सम्पन्नता	- श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी द्वारा दिए गए पाथेय का अंश	31
दक्षता आवश्यक है	- श्री शैलेन्द्र विक्रम	34
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	- श्री अतुल कोठारी	39
लकीरें इतिहास की	- मालती शर्मा	40
जनजातीय -शिक्षा की संकल्पना एवं उद्देश्य	- श्रद्धेय लज्जाराम तोमर	41
शिशु वाटिका पद्धति	- श्रीमती सुशीला दाते	45
विद्या भारती में वैदिक गणित की विकास यात्रा	- श्रद्धेय श्याम गोपाल रावले	47
गणित व विज्ञान द्वारा राष्ट्रीयता का जागरण	- श्रद्धेय रोशनलाल सक्सेना	49
खेलों के माधयम से विद्या भारती का योगदान	- मुखतेज सिंह बदेशा	51
पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य एवं शिशु विकास की संकल्पना	- श्रीमती सुशीला दाते	55
शिक्षण अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.)	- श्री देवकी नन्दन चौरसिया	57
Kumbh	- Sushil Kumar Vatta	59
What we can learn from Dr. Kalam on respecting traditions	- *Lt. Col. Ashok Kini*	62
India's Border Issues –Trilateral Solution	- Sh. G. Kishore Babu	63
MODERN CHALLENGES FOR TEACHERS AND SOLUTIONS	- Sh. Ramakrishna Rao	65
The role of Teacher in 21st century	- Sh. Tapan Kumar	68
AMRIT KAUR KAPURTHALA (1889-1964)	- Smt. Reena Jain	70

भिगो कर खून से वर्दी कहानी कह गए अपनी

विद्या भारती की योजना के तहत यह अंक विद्या भारती की विकास यात्रा का दर्पण बनना था। विकास यात्रा अर्थात् प्रारम्भ से वर्तमान तक। इस विचार से इतिहास के कुछ स्वर्णिम पृष्ठ मानस पटल पर उभरे। देश की विकास यात्रा का इतिहास!!

भारत का इतिहास वीरों के शोणित और तलवार से लिखा गया है, इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमने कभी आक्रान्ताओं के सम्मुख समर्पण नहीं किया। जब तलवारें जीत ली गई तो शहीद की वीरांगनाओं ने कभी शत्रु से समझौता नहीं किया। अपतु हर-हर महादेव के नारों के साथ स्वयं को जौहर की आग में समर्पित किया। ऐसी ही 29 जनवरी 1528 की एक घटना चंदेरी जिला अशोक नगर की महारानी मणिमाला के जौहर की है जिसने 16000 महिलाओं (राजपूत व अन्य) के साथ जौहर किया जो मध्ययुगीन इतिहास में सबसे विशाल जौहर माना जाता है। आज भी यह जौहर स्मारक बलिदान व सम्मान का प्रतीक है; जो अशोक नगर जिला मुख्यालय से 65 किलोमीटर दूर रानी मणिमाला के स्वाभिमान की कहानी कह रहा है।

इतिहास के ऐसे ही पृष्ठों में एक और अध्याय जुड़ा अभी हाल में 14 फरवरी को जब अत्यंत घृणित ढंग से निर्दोष सैनिकों को आंतकवाद का शिकार बनना पड़ा। अपनी ड्यूटी पर जाते हुए 40 सैनिक बिना बात के पुलवामा में आतंक की भेट चढ़ गए। देश में मातम छा गया। टी.वी. चैनलों पर शहीदों के परिवार के आँसू और बदले की गुहार अत्यंत हृदय विदारक दृश्य रहे। सोशल मीडिया पर श्रद्धाञ्जलि और शहीदों के लिए उफनी भावनाएँ :

किसी गजरे की खुशबू को
महकता छोड़ आया हूँ,
मेरी नन्हीं सी चिड़िया को
चहकता छोड़ आया हूँ।
मुझे छाती से अपनी तू लगा लेना
ऐ भारत माँ,
मैं अपनी माँ की बाहों को
तरसता छोड़ आया हूँ॥

पूरा देश, बूढ़े, बच्चे, जवान सभी कराह उठे। ऐसे कब तक आतंकी मानसिकता की भेंट चढ़ेंगे हमारे युवा? एक और ऐसा ही दर्द मीडिया में बहा:-

आज मन उदास है
कितने बेटे, भाई, पति,
पिता के लौट आने की,
टूट गई आस है।
सूने हो गए सुहागन के
बिंदिया व काजल,
कुंभलाएँगी अब बहनों की राखियाँ,
बच्चे किसे दिखलाएँगे
अपनी उपलब्धियाँ
आज धरती रो रही है,
आकाश रो रहा है।
ऐ जाने वाल तेरी
आत्मा को शांति मिले,
हर दिल यही कह रहा है,
और कह कर रो रहा है।

प्रतिदिन किसी न किसी शहीद के परिवार का चैनलों पर बिसूरना, बदले की इच्छा प्रकट करना, देश की सहानुभूति के लिए चुनौती बना हुआ था। परन्तु सरकार ने सेना पर स्वतंत्र निर्णय लेने का भार सौंप दिया और 12 दिन में ही 26 फरवरी को अत्यंत हर्ष का समाचार प्राप्त हुआ। बालाकोट में जैश के आतंकी कैम्प को वायुसेना ने तहस-नहस कर दिया। हर शहीद के घर हर्ष की लहर दौड़ गई। पूर्व सैनिक अधिकारियों ने वायुसेना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। एक शहीद की माँ ने हर्ष के साथ इस कार्रवाई को अंजाम देने वाले सैनिक बेटे की सलामती का सरकार से अनुरोध किया।

अवश्य ही सेना को जब स्वतंत्रता मिली तो सटीक एयर स्ट्राइक हुई और बिना किसी नुकसान के शत्रु के अड्डे को तहस-नहस कर दिया गया। सरकार के इस निर्णय ने अचानक अभिनेता राजकुमार के एक डॉयलॉग की याद दिला दी "हम तुम्हें मारेंगे, ज़रूर मारेंगे, लेकिन वो बंदूक भी हमारी होगी, गोली भी हमारी होगी और वक्त भी हमारा होगा बस ज़मीन तुम्हारी होगी।" अक्षरश: खरा उतरा।

बदला, बदला किससे? जिसने आतंकवाद को बढ़ावा दिया है, सहयोग व धन दिया है, उसका इलाज सर्वप्रथम होना चाहिए। मेरे मन में एक विचार आया जब समाचार में किसी ने पाकिस्तान को मिटाने की बात की। सच में अंदर तक घुस कर पाकिस्तान को काबू में लेना चाहिए। पाकिस्तान भारत का एक अंग काट कर ही बनाया गया है। जैसे किसी परिवार से एक बालक घर से भाग जाए, गलत संगत में पड़ कर बिगड़ जाए तो वह बिगड़ैल गलत काम ही करेगा। क्या उसे मार दिया जाए? नहीं बल्कि उसे कान पकड़ कर घर लाया जाए और परिवार उसका इलाज करे। इसी प्रकार इस बिगड़ैल पाकिस्तान

को पुनः भारत में मिलाकर अखंड भारत की पुनः रचना करनी चाहिए। जब पाकिस्तानी जनता को जीवन का सुख मिलेगा तो बिगड़ैल नेताओं का नशा उतर जाएगा। इस संदर्भ में मीडिया से दो पक्तियाँ उद्धृत करूँगी–

'घर में घुस कर मारा है,
कब्र तुम्हारी खोदी है,
हिन्दुस्थान में जो बैठा है,
वह बाप तुम्हारा मोदी है।'

वास्तव में पिता जी को इमरान के कान पकड़ कर ले आना चाहिए, अखंड भारत के स्वप्न के साथ!

यह इतना आसान नहीं परन्तु प्रयास अवश्य किया जा सकता है। भारत ने कभी किसी की जमीन पर बुरी नज़र नहीं रखी परन्तु यह भी सच है कि जो यहाँ आए खदेड़ दिए गए। इसके लिए बहुत बलिदान भी देने पड़े परन्तु आन, बान और आत्म सम्मान सर्वदा बलिदान चाहते हैं। कवि दिनकर की एक पंक्ति याद आ रही है–

पर का हम कुछ नहीं चाहते,
अपना किन्तु बचाएँगे।
जिसकी उँगली उठी,
उसे हम यमपुर को पहुँचाएँगे॥

अभी देश ने पहला सही कदम लिया है, ऐसे बहुत से कदम हमें लेने हैं। सेना को मन, धन से मज़बूत करना होगा। स्वार्थ छोड़कर लगन को निरंतर जीवित रखना होगा। देश के लिए शहीद नहीं, देश के लिए जीना होगा। एक नई योजना, नई मानसिकता और नए संकल्प के साथ। पाकिस्तान पराया नहीं अपना ही अंग है, जोड़ना होगा भारत में।

– **सम्पादक**

सौगंध मुझे इस मिटटी की..... – नरेन्द्र मोदी

सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।
सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।
मैं देश नहीं झुकने दूँगा,

मेरी धरती मुझसे पूछ रही,
कब मेरा कर्ज चुकाओगे।
मेरा अंबर पूछ रहा,
कब अपना फर्ज निभाओगे।
मेरा वचन है भारत माँ को,
तेरा शीश नहीं झुकने दूँगा।।

सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।

वे लूट रहे हैं सपनों को,
मैं चैन से कैसे सो जाऊँ।
वे बेच रहे हैं भारत को,
खामोश मैं कैसे हो जाऊँ।

हाँ मैंने कसम उठाई है,
मैं देश नहीं बिकने नहीं दूँगा।
सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।

वो जितने अंधेरे लाएँगे,
मैं उतने उजाले लाऊँगा।
वो जितनी रात बढ़ाएँगे,
मैं उतने सूरज उगाऊँगा।

इस छल-फरेब की आँधी में,
मैं दीप नहीं बुझने दूँगा।
सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।

वे चाहते हैं जागे न कोई,
बस रात का कारोबार चले,
वे नशा बाँटते जाएँ और,
देश यूँ ही बीमार चले।

पर जाग रहा है देश मेरा,
हर भारतवासी जीतेगा।
सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।

माँओं बहनों की अस्मत पर,
गिद्ध नजर लगाए बैठे हैं।
मैं अपने देश की धरती पर,
अब दर्द नहीं उगने दूँगा।
मैं देश नहीं रुकने दूँगा।।

सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।
अब घड़ी फैसले की आई,
हमने है कसम अब खाई।

हमें फिर से दोहराना है,
और खुद को याद दिलाना है।
न भटकेंगे न अटकेंगे,
कुछ भी हो इस बार,
हम देश नहीं मिटने देंगे।

सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूँगा।
मैं देश नहीं झुकने दूँगा।।

आलोक : कृपया सभी रचनाकार अपनी रचनाएँ प्रमाणपत्र सहित भेजें कि उनकी रचना किसी अन्य पत्रिका में नहीं भेजी गई है।

चंदेरी की महारानी मणिमाला का जौहर देखकर घबरा गया बाबर। उसकी चौथी बेगम हो गई थी बेहोश!

रानी पद्मावती ही नहीं, अपनी आन-बान और सतीत्व की रक्षा के लिए भारत के इतिहास में अनेक जौहर हुए हैं। यहाँ ऐसे ही जौहर एवं शाका की जानकारी दे रहे हैं, जिसे देखकर बाबर भी घबरा गया था! चंदेरी के महाराज मेदिनीराय एवं उनकी रानी मणिमाला के बलिदान पर प्रकाश डालता लेख

27 जनवरी 1528 की रात्रि का अंतिम प्रहर समूची प्रकृति सोई पड़ी थी, भोर होने में एक पहर शेष था, एकाएक रणतूर्य बज उठे, सुरक्षा चौकियों से सावधान होने के संकेत मिलने लगे। दुर्ग के प्रहरियों ने रणतूर्य बजाकर सजग होने का संदेश दोहराया उत्तर दिशा में धूल का बवंडर चंदेरी की ओर बढ़ चला आ रहा था। कुछ ही समय में धूल और लाली के मिश्रण ने चंदेरी नगर को ढक लिया था। महाराज मेदिनीराय परिहार ने चारों और दृष्टि डाली तब पता चला कि चंदेरी नगर चारों ओर से बाबर की तोपों से लैस सेना द्वारा घेरा जा चुका है। तभी भागता हुआ प्रहरी आया। महाराज की जय हो, तुर्क सैनिक एक पत्र देकर गया है। महाराज मेदिनीराय ने पत्र पढ़ा...। ''मेदिनीराय मेरी दिली ख्वाहिश है कि मुल्क में ज्यादा खून खराबा न हो, मुल्क में अल्लाह और ईमान की सल्तनत कायम हो जाए, काफिरों का सूर्य अस्त हो चुका है। इसके लिए तुम से दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूँ। तुम आकर मेरी मातहती(गुलामी) कबूल कर लो और राणा सांगा का साथ छोड़ दो, तुम्हें सोचने और समझने के लिए एक दिन का वक्त दे सकता हूँ, इससे ज्यादा रियायत की उम्मीद ना करना, आखिरी अंजाम क्या होगा, यह तो तुम खानबा में देख चुके हो। समय रहते समझ जाना काबिलियत की निशानी है। लेकिन मुझे सख्त अफसोस है, कि हिंद के क्षत्रियों में जोश ही बहुत है पर होश की बहुत कमी है, लेकिन तुमसे उम्मीद है कि अपने होशो-हबाश की मिशाल कायम करके मेरी मातहती (गुलामी) कबूल कर लोगे। काबुल से लेकर बेतवा तक के मालिक से दोस्ती करने पर तुम्हारा रुतबा बढ़ेगा न कि घटेगा, बड़ों की दोस्ती हमेशा फायदेमंद रहती है। अब अपनी अक्ल से काम लेना, अपनी औकात को नजर अंदाज ना करना। मैं भी तुम्हारी दोस्ती पर फक्र करुँगा।'' - शहंशाह बाबर।

इस भावी युद्ध की सूचना राणा सांगा को भेजी जा चुकी थी। परंतु बाबर का सौभाग्य कहिए, राणा सांगा इस युद्ध में भाग न ले सके। बल्कि ठीक इसी समय एक प्रहरी तुर्क वेश में राणा सांगा का पत्र लेकर आया। महाराज की जय हो..पत्र हाथ देते हुए । महाराज मेदिनीराय ने पत्र खोला और पढ़ने लगे।

''मेरे प्रिय मानस पुत्र मेदिनीराय, तुम्हारी चिंता में चितौड़ से चंदेरी के लिए चला, अब एरच में ठहरा हूँ, मेरे जीवन का यह अंतिम पड़ाव है। शरीर शिथिल तथा निर्जीव होता जा रहा है। प्राण शरीर की समस्त इन्द्रियों के कर्म समेट कर फड़-फड़ा रहा है। अब कुछ ही देर में इस विकलांग शरीर से नाता तोड़ लेगा। मेरे मन की इच्छा अतृप्त ही रह जायेगी। मैं चाहता था कि मेरे प्राण इस शरीर को युद्ध स्थल में ही छोड़ते, जिससे मुझे तृप्ति, तुम्हें सहयोग और आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा मिलती और बाबर का हिसाब-किताब भी पाई-पाई चुकता हो जाता। संयोग देखें कि बीच में ही बिचक रहा है। और मेरे कितने ही रोकने पर अब नहीं रुकेगा। इसलिए तुम्हें अपने जीवन का अंतिम पत्र लिख रहा हूँ।

प्रिय मेदिनी राय... थोड़े से ही साधनों पर निर्भर पिजड़े में बंद पक्षी की भांति तुम्हारी स्थिति आ गई है। अब तुम्हें बल से नहीं बुद्धि से काम लेना है। संयम और विवेक के अंकुश से विजय पा कर, दूरदर्शी, बुद्धिमतापूर्ण निर्णय लोगे, इसी विश्वास के साथ तुम्हें युद्ध का होता बनाकर अब अपने जीवन की अंतिम आहुति युद्ध के मार्ग में दे कर जा रहा हूँ। कुछ और अधिक लिखता लेकिन अब और लिखने की सामर्थ्य नहीं है। तुम बाबर की सेना से घिर चुके हो और मैं तुम्हारी चिंता की भावना से घिर चुका हूँ। तुम से अंतिम अनुरोध है कि विवेक से कार्य करना। मुझे खेद है कि जीवन की अंतिम आहुति युद्ध स्थल पर न दे सका। यह मेरी इच्छा नहीं है बल्कि मेरी विवशता

है। मानस पुत्र मुझे क्षमा कर देना...'' – राणा सांगा।

तभी मेदनीराय ने संकल्प लिया– हे धर्म पिता आपका मानस पुत्र रक्त की सरिता में स्नान कर, तुर्कों के रक्त को अंजुली में भर कर ही आपका तर्पण करेगा। उसी से आपकी आत्मा तृप्त होगी। तभी बाबर के विशेष दूत शेखगुरेन तथा अरयाश पठान ने पत्र का जबाब माँगा।

कोट नवै, पर्वत नवै, माथौ नवाये न नवै,

माथौ सन जू को जब नवै, जब साजन आये द्वार। असम्भव..... मेदिनीराय. .... हिन्दू क्षत्रिय है.... भारत के इतिहास में हिन्दू भेंट नहीं लेते हैं..... फिर समर्पण क्या होता है। यही हमारा इतिहास है। भाग्य के धनी बाबर के भाग्य से सांगा चले गये। जाओ बाबर को बता दो, दोनों ओर की फौजों को क्यों नाहक मरवाता है। हम दोनों मैदान में निपट लेते हैं जो हार जाए वह हार स्वीकार कर लेगा। बाबर यदि वीर है तो आमने-सामने आ जाए, तोपों की क्या आग दिखलाता है। जितनी आग उसकी तोप में है, इतनी गर्मी तो हर हिन्दू के खून में होती है।

पठान बोला महाराज ये सियासत नहीं है, आप सियासत की बात करें।

लुटेरों से सियासत की क्या बात करूँ? जो दूसरों के घर जलाता फिरता है उससे क्या बात करूँ। कह दो बाबर से हम युद्ध करेंगे। महाराज मेदिनीराय परिहार बाबर से युद्ध की घोषणा करते हैं।

बाहर शंख ध्वनि तथा रणतूर्य बज उठते हैं राजपूतों की भुजाएँ फड़क उठती हैं।

मेदनीराय का अपनी पत्नी से अंतिम संवाद – 'प्रिये मणिमाला अब हमें विदा दो, हो सकता है यह हमारे जीवन का अंतिम मिलन और अंतिम विदा हो।'

''आर्यपुत्र कौन सी शक्ति है जो संसार में भारतीय नारी के सुहाग को मिटा सकती है?; हाँ इतना अवश्य माना जा सकता है कि हमारा आधा अंग युद्ध की ओर जा रहा है, यदि कहीं वह रणचंडी का प्रिय हो गया तो अविलम्ब यह दूसरा अंग भी अग्निमार्ग से अपने आधे अंग से जा मिलेगा। फिर आप कैसे कह सकते हैं कि यह हमारा अंतिम मिलन है। महारानी मणिमाला ने आरती उतारी, महाराज अश्वारूढ़ हो कर सेना के मध्य पहुँच कर बोले –''बंधुओं संसार में अपना सोचा कभी पूरा नहीं होता, इस युद्ध के लिए मैंने और महावीर राणा सांगा ने निश्चय किया था कि बाबर को चंदेरी और बेतवा के बीच रोक कर हमेशा के लिए समाप्त कर देंगे पर ऐसा न हो सका। हमारे दुर्भाग्य से राणा सांगा हमें छोड़कर चले गए। बंधुओं पराधीनता के राज्य का यश, वैभव, हेय, त्याज्य और कलंक कालिमा में लिपटे हुए सुख हैं। क्षणिक सुख के लिए हम अपनी जाति, धर्म और देश की प्रतिष्ठा को गिरवी नहीं रख सकते! जीवन मरण तो ईश्वर के हाथ है, हम उसे रोक नहीं सकते! जब मरना निश्चित है तब मरने पर भी अमरपद मिल सके, ऐसी मौत तो मातृभूमि के लिए उत्सर्ग से ही मिलती है.... तो आओ चलें महाकाल के चरणों में अमरपद प्राप्त करें।

(यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि भारत में किसी हिन्दू सेना का सामना पहली बार तोपों से होने वाला था यही कारण था कि महाराज मेदिनीराय ने मरना तय मान लिया था...।)

दोनों सेनाएँ आमने-सामने थी, हर हर महादेव के जयघोष के साथ हिन्दू प्राणों की रक्षा को भूल कर, शरीर के ममता को त्याग कर, मौत का खुला आलिंगन करने के लिए मचल-मचल कर तुर्क सेना पर अप्रतिम साहस के साथ टूट पड़े। भले ही हिन्दू सेना का संख्या बल कम था पर पहले ही हमले में तुर्क सेना के अग्रिम पक्ति के सैनिक काट डाले गए। सेनापति महमूद गाजी के उकसाने पर भी तुर्क सेना पीछे हटने लगी। इस युद्ध में बुंदेलखंड के राव, सामंत और लड़ाकू वीर हिन्दु युद्ध के आमंत्रण को स्वेच्छा से स्वीकार कर मातृभूमि पर प्राणोत्सर्ग करने आ पहुँचे। महाराज मेदिनीराय ने हुँकार भरते हुए माँ चामुण्डा का जयकारा लगाया। हिन्दू सेना वीरता और बलिदान के उभार पर आ गई, अब तो तुर्क सेना में त्राहि-त्राहि मच गई। खानवा और पानीपत के विजेता बाबर भी हिन्दुओं के विकट युद्ध से भयभीत हो गया। इस विषम परिस्थिति को आँक कर तुर्क सेना पीछे हट कर खच्चर गाड़ियों पर लदी हुई तोपों को आगे बढ़ा दिया साथ ही घुड़सवार सैनिको को दाँयें और बाँयें से आक्रमण का हुक्म दिया। (मानो भेड़िए सिंहों को घेरने की कोशिश कर रहे हैं।) युद्ध के नवीन संचालन से सिंहों की गति अवरुद्ध हो गई तोपों की मार से चीख-चिल्लाहट बढ़ी तो बढ़ती ही गई।

हिन्दुओं की आधी सेना तुर्कों की चौगुनी सेना को मार कर वीरगति को प्राप्त हो चुकी थी। संध्या हो चुकी थी आज का युद्ध समाप्त हुआ। मेदिनीराय ने अपने सेनापति नारायण के साथ अपनी सेना को एकत्र कर दुर्ग वापस लौटे। बाबर ने चैन की साँस लेते हुए अपने

सैनिकों से खुदा का शुक्र है सांगा मर गया, नहीं तो तय था कि बेतवा के किनारे हमारी कब्र बनती! खैर अब बताओ हिन्दुओं के जुनून के आगे हमारी जीत कैसी हो? तभी महमूद गाज़ी ने कहा गुलाम के रहते आलमपनाह को तकलीफ उठाने की जरूरत नहीं है। आलमपनाह आज ही आधी रात को अहमद खाँ फाटक खोल देंगे और हम रात में ही हमला करेंगे।

रात्रि का प्रथम प्रहर था। रानी मणिमाला ने महाराज मेदनीराय के शरीर पर लगे घाव धोकर राज वैद्य के द्वारा दी गई दवा लगाई। महाराज गहन चिंतन में लेटे थे। महारानी पास में ही बैठी थी। महारानी पैर दबाते हुए बोली महाराज थोड़ा विश्राम कर लें। महाराज बोले 'नहीं मणी अब तो चिर विश्राम रणांगन में ही होगा।'

तभी हाँफते हुए सेनापति.... नारायण बोला महाराज की जय हो.... अहमद खाँ ने नगर का द्वार खोल दिया है नगर में बाबर की सेना घुस आई है। महाराज मेदिनीराय झटके से उठे और पीछे मुड़कर बस इतना कहा विदा... अंतिम विदा मणि.... और बाहर निकल आये। महारानी मणिमाला किंकर्तव्य विमूढ़ खड़ी देखती रहीं। महाराज मेदिनीराय ने नगर के मध्य पहुँच कर शंखध्वनि का उद्घोष किया। वीरो मरणहोम में यदि जीवन की आहुति नहीं गिरी तो पुण्य नहीं मिलेगा, कीर्ति भी धूमिल पड़ जायेगी, शक्ति हीनता का थोड़ा भी आभास जीवन में न होने पाए, यदि कहीं इसका अंकुर पनप गया तो जीवन नष्ट होगा ही मरण भी मूल्यहीन हो जायेगा। अतएव हमें अपराजेय योद्धा की भाँति तांडव के ताल पर मृत्यु के साथ नृत्य करना है। रणचंडी के चरणों में रक्त का अर्घ देने का सुअवसर है।

हर हर महादेव का घोष दोहरा कर हिन्दू तुर्कों पर टूट पड़े, तिल तिल बढ़ना अब तुर्कों के मौत का खुला खेल था। इस परिस्थिति को भाँप कर बाबर ने चारों ओर से तोपों को चलाने का हुक्म दिया। तोपों को रोकने मेदिनीराय प्रतिहार बढ़े तो बढ़ते ही गये। अब चंदेरी के आकाश में चारों ओर धुँआ और धूल के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। दोनों ओर की सेनाओं में अंधाधुंध तलवारें चल रहीं थीं। कुछ ही क्षणों में महाराज मेदिनीराय घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। महाराज के विशेष सहायक नारायण परिस्थिति को भाँप कर महाराज को कंधों पर उठा दुर्ग की ओर बढ़ गए।

इधर तुर्क सेना ने चंदेरी नगर में आग, लूट तथा हत्या का जो कार्य शुरू किया दूसरे सारे दिन चलता रहा। सूर्यास्त होने पर ही तुर्क सेना शिविर में लौटी। बाबरनामा के अनुसार चंदेरी नगर में हुए नर संहार का आकलन करने के लिए बाबर ने मरे हुए लोगों के शीश कटवाए तथा सब को इकट्ठा करवा कर टीले बना कर झण्डा गाढ़ दिया। जो नगर के किसी भी स्थान से आसानी से देखा जा सकता था। इधर चंदेरी दुर्ग में सभी साँसों को रोके महाराज मेदिनीराय के लिए चिंतित बैठे थे। रात्रि के तीसरे पहर प्रतिहार मेदिनीराय ने आँखें खोलीं। मेदिनीराय उठ कर बैठने लगे तब मणिमाला ने सहारा दिया। महल में महाराज के होश में आने की चर्चा फैल गई, नारायण ने औषधि युक्त दूध का कटोरा मेदिनीराय के मुँह से लगाया, दूध पीने के बाद मेदिनीराय में स्फूर्ति आई।

नारायण.....

कहें महाराज...

नारायण चंदेरी पतन के बाद मैं अभी तक जिंदा हूँ यह सोचकर आश्चर्य में हूँ। अब मेरे जीवन के नाटक का पटाक्षेप होने को है। इन्हीं विचारों में भोर हो गई। सुबह जब मेदिनीराय ने खिड़की खोली तो नरमुण्डों पर गढ़ा तुर्क झण्डा देखा तो चीख-चीख कर कहा- धिक्कार है, मुझे जो मेरे रहते चंदेरी पर तुर्क झण्डा फहरा रहा है। तभी तड़प कर महारानी मणिमाला ने कहा, 'महाराज वह देखो सामने झण्डे के चिथड़े उड़ गये हैं।' महारानी ने धनुष उठाया और झण्डे के चिथड़े उड़ा दिये। तब तक धूप निकल चुकी थी। चारों ओर से गिद्ध, चील, कौवे चंदेरी की ओर उड़े चले आ रहे थे, नर माँस खाने के लिए! यह देख कर मेदिनीराय ने इतना ही कहा जो प्रभु की इच्छा... तभी एक द्वारपाल अंदर आया, अन्नदाता की जय हो..., 'कहो क्या बात है'; 'महाराज द्वार पर तुर्क खड़े हैं, कह रहे हैं, हार स्वीकार करके महल खाली कर दो।'

दुर्ग में ठहरे नागरिकों को बुलाया गया। जन समूह एकत्र हुआ मेदिनीराय बोले बाबर का संदेशा आया है हार मान कर महल खाली कर दो, सभी में सन्नाटा छा गया! कुछ ने संधि करने की सलाह दी। इसी बीच मणिमाला बोली, ''मेरे वीरो ये समय हित-अहित विचारने का नहीं है। मृत्यु अवश्यम्भावी है। चाहे शयन कक्ष में आये या रणक्षेत्र में। विचारणीय विषय तो यह है कि संधि करने का हक अब न तो महाराज को है न ही पंचों को, यदि संधि करनी ही थी तो हमारे वीरों को मरवाया क्यों? क्या जबाब दोगे उन विधवाओं को?, क्या जबाब देंगे उन माँओं को जिनके

लाल रणचण्डी की भेंट चढ़ गए?..., नहीं अब कोई समझौता नहीं, हम अपने कुल के लिए जूझ के मरने वालों की कीर्ति को कलंकित नहीं कर सकते, अब अंतिम युद्ध होगा।''

यह सुन सभी एक स्वर में बोले ''हाँ, हम अंतिम युद्ध करेंगे। महाराज खड़े हुए। हाँ अब मैं अंतिम युद्ध करने जा रहा हूँ... जिन्हें साथ चलना है वह स्वेच्छा से चलें, जिनकी इच्छाएँ शेष हैं, वह पलायन कर सकता है, बाहर निकलने का इंतजाम करवा दिया गया है। जो युद्ध करना चाहते हैं वह केशरिया धारण कर लें। आज माघ के महीने में भी केशरिया की बहार होगी, क्योंकि हम मरणोत्सव का महापर्व मनाने जा रहे हैं।'' चन्द्रगिरि दुर्ग में मरणोत्सव पर्व की तैयारी शुरू हो गई! हिन्दू स्वर्ग के मेहमान बनने के लिए केशरिया धारण कर तैयार होने लगे थे।

''मणी.. हमें भी महापर्व के लिए तैयार कर दो!''

''महाराज के आदेश का पालन करती हूँ। महाराज मुझे भी आदेश दें कि मैं जौहर की आग जला आऊँ, जो कभी न बुझे।'' दुर्ग के बाहर रणभेरियाँ बज उठीं। नगाड़े गड़गड़ाने लगे। महारानी ने अपने हाथों से महाराज को केशरिया पहना कर मृत्यु वरण के लिए तैयार कर दिया। महाराज मेदिनीराय अंतिम युद्ध के लिए महल से बाहर निकल पड़ते हैं, तभी मणिमाला दौड़कर महाराज के चरणों में गिर पड़ती हैं, महाराज मेदिनीराय भावनाओं के समुद्र से बाहर निकल कर दुर्ग से बाहर निकल आए।

'आओ वीरो अपने जीवन के सबसे सुखद और पावन समय को सार्थक कर लें! यदि काल अमर है तो हम महाकाल बन जाएँ!' हर-हर महादेव करते हुए हिन्दू वीर दुर्ग के प्रमुख द्वार से बाहर आ गए। दुर्ग का द्वार खोल दिया गया जो आज भी खुला है। हिन्दू तुर्कों पर घायल शेर की भाँति टूट पड़े। दोनों ओर से अंतिम युद्ध लड़ा जाने लगा! दुर्ग के मुख्य द्वार से रक्त की सरिता बहने लगी, लाशों के ढेर लग गए। दिन के तीसरे पहर तक युद्ध चला और सभी महाराज मेदिनीराय सहित तुर्कों को काटते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए। बिल्कुल शांति छा गई। मुख्य द्वार खुला पड़ा था फिर भी तुर्क भीतर घुसने की हिम्मत न कर सके, बाबर जिसके साहस की दंत कथाएँ एशिया भर में फैल चुकी थीं वह भी चंदेरी दुर्ग में घुसने में रक्त की धारा लाँघने में काँप गया था। यह देख कर बाबर के मुँह से घबराकर कर निकल गया... ओह... 'खूनी दरवाजा'....।

उस दरवाजे को आज भी 'खूनी दरवाजा' के नाम से जाना जाता है। अंतिम बचे प्रहरी ने महारानी मणिमाला को संदेश दिया.... अन्नदाता वीरगति को प्राप्त हो गए। मणिमाला काँप कर पाषाणवत् हो गई। फिर झटके से अपने आपको सम्भालते हुए सुहाग, सिंदूर, मेंहदी तैयार कर पूजा का थाल लेकर बाहर आई। दुर्ग की स्त्रियों में हाहाकार मचा हुआ था। सौन्दर्य और सुहाग की साकार मूर्ति को देखकर सभी का शोर शांत हुआ। मणिमाला बिना कुछ बोले महाशिव के मंदिर चली गई, शिव को गंगाजल से स्नान कराकर, मासिक पूजन कर अखंड सौभाग्य का आशीष व चरणोदक लेकर लौटी।

बाहर अनुमानत: 1500 क्षत्राणियाँ खड़ी थीं, उन्हें सम्बोधित किया, 'बहनो... हम प्रत्येक परिस्थिति में जीते हैं, लेकिन पति से अलग होकर हम नहीं जी सकते, पति के उठते पाँव के चिन्हों पर ही हमें पाँव रखना है.... हमारे प्राण प्रिय से हमारा सम्बंध मात्र शरीर का नहीं है, वरन् आत्मा का सम्बन्ध है। उसी आत्मानुभूति से प्रेरित होकर हम आत्मा के मिलन के लिए सुहाग की अमरता पाने पवित्र अग्नि मार्ग से जा रहे हैं। मेरे जीवन में ही क्या, युगों युगों से भारतीय नारी के जीवन में आग और सुहाग कोई अलग वस्तु नहीं रही है। आग और सुहाग का चिर संबंध है। जब तक भारत में इस आग और सुहाग के महत्त्व को नारी जानती और मानती रहेगी, तब तक एक क्या हजारों बाबर भी एक साथ मिलकर भारत की पावनता और संस्कृति को नहीं जीत सकते भले ही कुछ समय के लिए भारत का तेज निस्तेज हो जाए, छुपी हुई आग का दबा हुआ बीज फिर से फूटेगा और अवश्य फूटेगा।

चिर सुहागन मणिमाला के संकेत पर गिलैया ताल किनारे बनी विशाल चिता में महारानी मणिमाला के आदेश पर आग प्रज्वलित कर दी गई। कुछ ही क्षणों में लपटें आकाश को छूने लगीं। गिलैया ताल किनारे 1500 राजपूत रमणियों ने अपने जीवन को होम कर दिया। देखते-देखते समूचा दुर्ग आग का गोला बन चुका था। जैसे ही तुर्क सैनिक दुर्ग के भीतर जाने को हुए तो बचे हुए दो-चार सैनिकों ने मोर्चा सम्भाला और वीरता पूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। अहमद खाँ और बाबर अगल-बगल खड़े हुए जलती चिता को देख रहे थे। जीवित जलती कोमलांगियों को देख बाबर बेचैन हो गया। उसका कठोर हृदय भी पीड़ा से कराह उठा! उसी समय चिता के भीतर से एक सनसनाता हुआ तीर आया और बाबर

की पगड़ी में लगा और वह जमीन पर गिर गई। तुर्कों में फिर आंतक छा गया तब बाबर के सभी सैनिक भाग कर चिता के नजदीक पहुँचे और देखा कि मणिमाला अपने तरकश का तीर प्रयोग कर खाली धनुष कंधे पर डाल कर उस महाचिता को प्रणाम कर सुहाग के गीत गाती हुई चिता की ओर ऐसे बढ़ती गई जैसे मुगल बेगम फूलों की सैर करने जाती हैं। यह देख बगल में खड़ी बाबर की चौथी बीबी दिलावर बेगम के मुँह से चीख निकली और बेहोश हो गई।

बाबर ने अपनी आत्मकथा में इस युद्ध का वर्णन करते लिखा है कि उसने चंदेरी को मात्र तीन घड़ी में जीत लिया था, यह अपने आप में श्लाघापूर्ण है और विजेता के बड़बोलेपन का उदाहरण मात्र है! बाबर के इस कथन की धज्जियाँ उसके द्वारा शेख गुरेन और अरायाश खां पठान को बारम्बार संधि के लिए चंदेरी भेजने की घटना से ही उड़ जाती हैं! हकीकत तो यह है कि चंदेरी की जटिल भौगोलिक रचना, मेदिनीराय परिहार का सैन्य बल और खानवा के युद्ध में उसका शौर्य देखकर बाबर की हिम्मत जबाब दे रही थी। बाबर ठगा सा तलवार टेके हुए एकटक खड़ा देखता रहा। बाबर अनमना सा अपने खेमे में लौट आया चंदेरी दुर्ग जीतकर। बाबर ने चंदेरी के भग्न ध्वस्त दुर्ग की सूबेदारी अहमद खाँ को सौंप कर उसी समय दिल्ली के लिए कूच कर दिया। चंदेरी दुर्ग की जलती चिता भभकती रही, इस सुहाग की आग को लोगों ने 15-15 कोस दूर से देखा। चंदेरी-जौहर का पता चलते ही सुदूर अंचल की प्रजा भागी-भागी आई और श्रद्धा सुमन अर्पित कर धन्य हुई। वहाँ पहुँचते ही अनायास ही मुँह से बोल फूट पड़ते हैं -

पग-पग पर लाल न्यौछावर हुए।
बजासे लाल भई जा चंदेरी की माटी॥
अत्र सरस्तीरे असंशख्याता क्षत्रिय
वीरांगना सतीत्व रक्षार्थ जौहरेण
विधिना ज्वलनं प्रविष्य दिवंगताः॥

- संकलित

शिशु केंद्रित पंचमुखी शिक्षा प्रणाली

शिशु या छात्र				विश्लेषण	शिक्षा क्षेत्र/केन्द्र			
परिधि	संरक्षा	विकास	मूल्यांकन		परिधि	संरक्षा	विकास	मूल्यांकन
दृश्य रूप काया, अन्नमय कोष	आहार, स्वच्छता वेशभूषा, जागरण शयन	स्वास्थ्य निरिक्षण खेलकूद व्यायाम	श्रमनिष्ठा श्रमदान रक्तदान आत्मसमर्पण	1 शरीर	भौतिक संसाधन विद्यालय भवन, वाहन, मैदान, उपकरण	पर्यावरण, देखभाल, रख-रखाव, उपयोग	आधुनिक उपकरण दान-संग्रह	अधिकाधिक व्यवहार संपर्क स्थान
चेतना या सक्रियता, प्राणमय कोष	प्राणयाम, स्वावलंबन स्वाभिमान	मातृभाषा, कर्ममय जीवन योगक्षेम व्यवसाय, चाकरी धर्म-संस्कृति	संगठन एवं सदाचार हेतु संघर्षशीलता	2 प्राण	मानव संसाधन छात्र, अभिभावक आचार्य, संरक्षक आदि	बैठकें विचार-विमर्श समन्वय	प्रशिक्षण, सम्मेलन दायित्व विभाजन जनसम्पर्क	कार्यकर्ता निर्माण टीम-भावना परिवार-भाव
मानसिक स्थिति मनमय कोष	नीति-शिक्षा अनुशासन, संयम योगाभ्यास संस्कृत शिक्षा	सामाजिक चिंतन देश-भ्रमण सामूहिक कार्य	पिछड़ों को आगे बढ़ाने में रुचि ऋणमुक्ति का भाव	3 मन	सामाजिक परिवेश संस्कार केन्द्र	स्वसंचालित व्यवस्था देश-विदेश की संवाद समीक्षा	पुरातन छात्र समावेश, प्रासंगिक कार्यक्रम, शिशु किशोर भारती	प्राकृतिक या राष्ट्रीय संकट में सक्रिय सहयोग सामाजिक एकरूपता
बौद्धिक क्षमता विज्ञानमय कोष	श्रद्धाभाव, अध्ययन पठन-पाठन आत्म निर्भरता	अनुशीलन, गृहकार्य स्वाध्याय आत्म निरिक्षण	रचनात्मक, लेखन कला एवं ज्ञान का वितरण आत्मविश्वास	4 बुद्धि	शैक्षिक परिवेश विद्वत परिषद, शिक्षा विभाग	आधुनिकतम पद्धति से पाठदान, शैक्षिक कौशल एवं शैक्षिक सामग्री	वाचनालय, विद्यालय निरीक्षण सहपाठ, भ्रमण	परीक्षा फल, प्रतियोगिता सामाजिक एवं सम्मान
विवेकपूर्ण व्यवहार आनंदमय कोष	सत्य-मधुर वाणी, प्रार्थना, मौन अभिवादन	सत्संग, संगीत-प्रेम, राष्ट्रभक्ति ईश्वर भक्ति	चतुर्विध पुरुषार्थ देशभक्ति पूर्ण समाजसेवी आचरण	5 आत्मा	शुद्ध-पवित्र, सांस्कृतिक परिवेश, प्राकृतिक	प्रेरणादायी, चित्र-वाणी साज-सज्जा, अभ्यर्थना	उत्सव पालन, सांस्कृतिक कार्यक्रम बागवानी	सामाजिक चेतना का केन्द्र

विद्या भारती के संरक्षक मा. ब्रह्मदेव शर्मा (भाई) जी से सम्पादक की वार्ता

विद्या भारती की विकास यात्रा का विशेषांक छपने की चर्चा हुई तो सबसे पहले जो नाम मन में करवटें लेने लगा वह नाम है विद्या भारती के संरक्षक मा. ब्रह्मदेव शर्मा (भाई) जी का। पद्श्री से सम्मानित, अपने आत्मीयतापूर्ण विशिष्ट गुणों से सहज ही सभी को अभिभूत कर देने वाले, सहज, सरल जीवन यापन करने वाले भाई जी। प्रस्तुत है उनकी स्मृत्ति की गलियों में पहुँचने का सहज ऐहसास और उससे प्राप्त प्रेरणा के मोती।

सं.- भाई जी, मैं सर्वप्रथम आपके जन्म व बाल्यकाल के विशेष क्षणों के बारे में जानना चाहती हूँ?

भाई जी- 3 नवम्बर 1936 को अलीगढ़ के गनियावली गाँव में मेरा जन्म हुआ। वहीं पर विद्यालयी शिक्षा पूर्ण कर अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एम.ए. व बी.टी. किया। 1946-47 में शाखा जाने लगा और बाल स्वयंसेवक बना। विद्यार्थी जीवन में ही विस्तारक का कार्य किया, सन् 1962 में प्रचारक का दायित्व मिला। मेरठ आया। मा. विश्वनाथ लिमये जी ने अल्मोड़ा में 3 तक वर्ष प्रधानाचार्य का पद निभाने का दायित्व दिया। वैसे अध्ययन-अध्यापन का अनुभव मुझे नहीं था परन्तु उत्तराखंड में संगठन का कार्य खड़ा करना था अत: जो दायित्व मिला उसे निष्ठा से निभाया।

सं.- भाई जी, बाल्यकाल से आप संगठन से जुड़ गए थे। कृपया प्रचारक के दायित्व के बाद आपकी यह सामाजिक यात्रा कैसी रही और किन-किन संघर्षों से जूझना पड़ा। विस्तार से बताइए।

भाई जी:- मा. कृष्णचंद गाँधी, तिलकराज जी शिशु शिक्षा मंडल का कार्य देख रहे थे उत्तर प्रदेश में गोरखपुर में शिशु शिक्षा का कार्य हो रहा था। परन्तु पहाड़ पर कार्य में तेजी लाने की दृष्टि से नीचे से कार्यकर्ताओं को ले जाकर गति प्रदान की गई।

पहाड़ों में जातीयता का बोलबाला था। अत: वहाँ के समाज को इस से मुक्त कराना था। मा. भाऊराव देवरस जी से मेरे अच्छे सम्बंध थे और उन्हीं से प्राप्त प्रेरणा के फलस्वरूप मैं कर्तव्य पथ पर बढ़ता गया। प्रारम्भ में आर्थिक सहयोग भी नीचे से लिया परन्तु धीरे-धीरे पहाड़ों से जो लोग जाकर शहरों में काम कर रहे थे उन्हें सहयोग की प्रेरणा देकर पहाड़ों पर कार्य को सुचारू रूप से चलाने का बीड़ा उठाया। वहाँ मिलिट्री को भी इस कार्य में अपना सहयोग देने को उत्साहित किया। बम्बई ने भी इस दायित्व में पूर्ण सहयोग किया। वहाँ पर कार्यरत पहाड़ी व्यक्ति पूरी तरह से इसमें संलग्न हो गए। वहाँ पर कवि सुमित्रानंदन पंत, धनानन्द पाण्डे जैसे विद्वानों का सानिध्य मिला। 3 जुलाई 1975 में आपात्काल के दौरान् गाँधी जी और राणा प्रताप जी जेल चले गए तो वहाँ की व्यवस्था का दायित्व मुझे मिला तो मैं लखनऊ चला आया। जेल गए महानुभावों के परिवारों की चिन्ता करनी थी। जब मैं एस. एम. कॉलेज चन्दौसी में पढ़ रहा था तब वहाँ प्रथम वर्ष में एक लड़का पढ़ता था, वही 6 अगस्त 1975 को मुझे गिरफ्तार करने आया जहाँ हम किसी विद्यालय में सोते थे। 19 महिनों के लिए मुझे जेल जाना पड़ा।

सं.- भाई जी, आप शिक्षा क्षेत्र के दायित्व को कहीं न कहीं निभा रहे थे। आपका विद्या भारती से सम्बंध कब और कैसे हुआ?

भाई जी- उत्तर प्रदेश में जो शिक्षा का कार्य चल रहा था उसके लिए बहुगुणा जी ने बहुत समस्याएँ पैदा कीं। अत: श्रद्धेय भाऊराव जी से बात कर शिशु संगम आयोजित करने का विचार किया। उसमें कृष्ण चंद गाँधी जी के साथ मुझे दायित्व मिला। सभी ने कुछ न कुछ दायित्व संभाला। 16500 शिशुओं का यह शिविर जिसका संचालन भी शिशुओं ने ही किया। शिविर के मुख्य अतिथि थे राष्ट्रपति महामहिम नीलम संजीव रेड्डी जी व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिथि थे उपप्रधानमंत्री जगजीवन राम। शिविर के दौरान् ही विद्या भारती के गठन का विचार आया। गुलाटी जी गुज्जरमल्ल वर्मा व सभी ने इस पर चिंतन किया। मा. लज्जाराम जी तोमर तो पहले से ही उत्तर प्रदेश की भारतीय शिक्षा समिति का कार्य देख रहे थे। आचार्यों कार्यकर्ताओं को मिला कर शिविर की कुल संख्या लगभग 20 हजार थी। विद्या भारती के गठन होने पर पहले महामंत्री मा. गुज्जरमल्ल वर्मा बने। उस समय सभी क्षेत्रों में काम नहीं था। अत: सम्पूर्ण भारत में कार्य प्रारम्भ करने का

विचार बना।

1982-83 में लज्जाराम जी तोमर उत्तर प्रदेश के पहले संगठन मंत्री बने। इसमें भाऊराव जी की विशिष्ट प्रेरणा रही। मैं लखनऊ में ही दायित्व सम्भालने लगा। वैसे बाहर जाना होता था। सन् 1982 में भाऊराव जी के स्वप्न स्वरूप लखनऊ में शोध संस्थान की स्थापना हुई। जिसकी रूपरेखा व कार्य मिलजुल कर करते रहे। संगठना बढ़ती रही व सुचारू होती गई। इसी श्रृंखला में सन् 1985 में लज्जाराम जी तोमर अखिल भारतीय संगठन मंत्री बने।

संस्कारक्षम शिक्षा व्यवस्था का 6-8 कक्षा का कार्य मा. राणाप्रताप जी देख रहे थे। लज्जाराम जी आगरा में प्रधानाचार्य थे इसके साथ साथ अन्य दायित्व भी संभालते थे। इसी बीच हिमाचल में कार्य प्रारम्भ करने के लिए देहरादून से प्रधानाचार्य लाया गया। उत्तर प्रदेश का शिक्षा कार्य सफलता से चल रहा था। हिमाचल के कार्य में नारायण दास जी को व्यवस्थित करने हेतु रखा गया। कृष्णचंद गाँधी जी हाफलांग, असम में कार्य की व्यवस्था देख रहे थे।

1984-85 में ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा व नगरीय क्षेत्र में सेवा बस्ती की शिक्षा का कार्य प्रारम्भ करने का विचार आया। उत्तर प्रदेश में शिक्षा का कार्य बहुत अच्छा था। अच्छे विद्यालय भी थे। मा. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) से वहाँ प्रश्न किया गया कि आपके विद्यालय बहुत अच्छे हैं परन्तु सेवाबस्ती के बच्चों की शिक्षा के बारे में आपने क्या सोचा? तब उन्हीं की प्रेरणा से सेवा बस्ती में कार्य करने हेतु संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने की व्यवस्था बनी। विचार आया कि इनके संचालन हेतु विद्यालय सहायता करे। बरेली, कानपुर, हल्द्वानी, आगरा आदि शहरों में कार्य प्रारम्भ हुआ। आर्थिक संग्रह में सर्वप्रथम सहयोग उत्तर प्रदेश में प्रारम्भ हुआ। मथुरा प्रकाशन ने दो चित्र तैयार किए जिनका मूल्य 2-2 रुपये था। उनकी बिक्री से जो धन संग्रह हुआ वह संस्कार केन्द्र हेतु प्रयोग हुआ। दीनदयाल जी उपाध्याय के पैतृक गाँव नंगलाचन्द्रभान में ग्रामीण, उपेक्षित व जनजाति क्षेत्र की शिक्षा विषय को लेकर बैठक हुई और सुचारू रूप से शिक्षा व्यवस्था की योजना तैयार की गई।

इसके पश्चात् गुमला में जनजातीय शिक्षा बैठक (बिहार), सागर (मध्य प्रदेश) में ग्रामीण शिक्षा बैठक व गुजरात तथा आंध्र में भी कार्य को गति प्रदान करने का प्रयास आगे बढ़ा। कार्य इतना व्यवस्थित रहता था कि किसी प्रकार की कहीं दुर्घटना नहीं होती थी।

मुझे याद आया कि दिल्ली में शिशु शिविर में एक बालक का बिस्तर रह गया था जो एक सप्ताह बाद उसके घर पहुँचा दिया गया। एक बालिका लघुशंका हेतु उठी परन्तु गलती से दूसरे टैंट में पहुँच गई परन्तु थोड़ी देर में उसे खोज कर उचित जगह पहुँचा दिया गया। बालकों के साथ स्नेह व अपनत्व शिक्षा के लिए विशेष आवश्यक है। जीवनपर्यन्त छात्र का अपने विद्यालय से सम्बंध जुड़ा रहे ऐसा वातावरण दिया जाता था।

शोध संस्थान का शिलान्यास भाऊराव जी ने एक डॉक्टर (पूर्व छात्र) से करवाया। 1967-68 में लखनऊ में आचार्य प्रशिक्षण का कार्य प्रारम्भ हुआ। यहाँ से प्रशिक्षित आचार्यों को पंजाब, मध्य प्रदेश, बंगाल व आसाम तक भेजा गया। आचार्य अधिकतर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता ही होते थे। पूरा परिवार शिक्षा में सहयोग करता था। श्रद्धेय नाना जी देशमुख का विचार था कि पति-पत्नि दोनों शिक्षा में सम्मिलित हों तभी संस्कारक्षम वातावरण, सहयोग व अपनत्व का वातावरण बनेगा। वैसे 1945-46 में भी मध्य प्रदेश में शिक्षा की दृष्टि से कुछ कार्य शुरू हुआ। परन्तु 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगने से गति नहीं पकड़ पाया। परन्तु सन् 1952 में गोरखपुर में योजना बद्ध कार्य प्रारम्भ हुआ। नाना जी देशमुख प्रबंधन में थे। एक कक्षाकक्ष की व्यवस्था की गई जिसमें शिशु पढ़ने आते थे। जब शिशु मंदिर की स्थापना हुई तो श्रीकृष्णकांत वर्मा जी प्रचारक से गोरखपुर के शिशु मंदिर के प्रधानाचार्य बने। शिक्षा व्यवस्था में शिशु भारती/ बाल भारती का गठन बालकों में नेतृत्व व सहयोग भाव जगाना था।

अभिभावक सम्पर्क व सम्मेलन शिक्षा व्यवस्था हेतु महत्वपूर्ण माने गए क्योंकि बालक विद्यालय में मात्र छः घंटा ही व्यतीत करता है। अतः अभिभावक को जानकारी देना अत्यंत आवश्यक था। 2000 संकुल केन्द्र स्थापित किए जो बढ़ते-बढ़ते 9000 हो गए।

लज्जाराम जी विद्यालय की स्वच्छता, अभिभावक सम्पर्क तथा आपसी भाईचारे पर अत्यंत बल देते थे। प्रधानाचार्य स्वयं अपने दो विषयों का शिक्षण अवश्य करे। प्रधानाचार्य हरिशंकर कश्यप जी अपने विषय का शिक्षण स्वयं करते थे। इसके अतिरिक्त आचार्यों से भी पूछताछ तथा उनका सहयोग करते। शैक्षणिक क्षेत्र में सबसे मुख्य संस्कार समय पालन

का है।

सं.- मैंने आपके कुछ लेख पढ़े हैं। आपने लेखन कार्य भी किया है?

भाई जी - नहीं, नहीं मेरा लिखने का स्वभाव नहीं है। वह तो सामजिक कार्य व पारिवारिक सम्बंधों के कारण भावनाओं की गहनता आ जाती है। हम भावनात्मक स्तर पर जुड़ जाते हैं। अपनत्व पैदा हो जाता है। अत: लेख में वह भाव दृष्टिगत होता है।

सं.- भाई जी, आपके अनुसार आदर्श आचार्य कैसा होना चाहिए?

भाई जी- जो एक Common man हो, ध्येय के प्रति दृढ़ शक्तिवाला कार्यकर्ता हो। बाल केन्द्रित व समाज केन्द्रित शिक्षा को समझे। सांस्कृतिक थाती को बालक तक पहुँचाने में सक्षम हो।

सं.- अच्छा, आदर्श विद्यालय कैसा होना चाहिए?

भाई जी- सर्व प्रथम जो बिना सरकारी सहायता के चले। बिना भेदभाव हर वर्ग के बालक को शिक्षा प्रदान करे। जातिपंथ और राजनीति से अलग रहे। हमने अपने कार्यक्रम में के.सी. पंत व नारायण दत्त तिवारी तथा शिवराज पाटिल व मोती वोरा को भी साथ रखा है। बल्कि मुलायम सिंह हमारी शिक्षण संस्थाओं के लिए विरोधी बात करने के कारण अभिभावकों द्वारा घेर लिए गए थे। ऐसा विश्वास विद्यालय का समाज में बनना चाहिए।

सं.- आप विद्या भारती के संरक्षक हैं। क्या परामर्श वरिष्ठतम सदस्य के नाते देना चाहेंगे?

भाई जी- आधुनिक आवश्यकताओं को अपनाते हुए मूल से नहीं हटें। आत्माभिमान, संस्कृति, मातृभाषा के सम्मान के प्रति सजग रहें। भाषाएँ कितनी भी सीखी जा सकती हैं परन्तु मातृभाषा का सम्मान रखना चाहिए। कार्यक्रम विशाल हों मुझे कष्ट नहीं परन्तु कार्यक्रम विद्यालय केन्द्रित हो ताकि विद्यालय की गतिविधियों को प्रदर्शित किया जा सके। अभी लगभग 13000 विद्यालय हैं। आठ-नौ हजार और खोलने की आवश्यकता है। विशाल कार्यक्रम से धन और कार्यकर्ता की कार्यक्षमता क्षीण हो जाती है। अत: उसे उचित उपयोग में लाना चाहिए। अपनी शक्ति आचार्य के मानधन व विकास के लिए लगानी चाहिए।

सं.- अंत में अपनी जीवन यात्रा को एक वाक्य में कहें।

भाई जी- समाज को साथ रखने में कोई कठिनाई नहीं आई। सब सहज रहा है।

सं.- अद्‌भुत, विद्या भारती ही नहीं आप समग्र समाज के संरक्षक हैं। मेरा सौभाग्य है कि आपसे face to face वार्ता करने का अवसर मिला। धन्यवाद।

सीमा शंखनाद

तो उठा अब शंखनाद
राष्ट्र की अब एक पुकार,
बहुबल दिखा रहा वह हमको,
राष्ट्र देखो बार-बार।
युद्ध की बारी अब आई है,
अब बस अपनी भारत माता प्यारी है,
इतिहास बदलना आता है अब
इतिहास बदलने की बारी है।

वीर सपूतों का शव जब आता,
आँखों से खून तब बह जाता,
वह वीर भारत माँ को भाता,
सीमा पर है जो लड़कर
अपना रक्त बहाता।
माँ कह रही पुकार के,
अब कर्ज़ उतारो
शत्रुओं को मार के,
आँचल सूने-सूने हैं
अब उस माता के,
आँचल कहे पुकार के।
कर्ज उतारो अब हत्यारों को मार के।

तोड़ो बंदिशों की अब यह दीवार,
देश एक हो रहा अब करो प्रहार,
आंतकियों की आड़ में
लड़ रहा यह कायर,
अब कोई वक्त न रहा
बनने को शायर।
अब कलम छोड़ो पकड़ो तलवार,
जड़ से करो इन कायरों का फिर संहार।
राष्ट्र की जब बात आए तो छोड़ो
घर-वार, शत्रु सीमा में घुसकर
विश्व को दिखाओ रौद्र संहार।

सामर्थ्य है तो दिखाना पड़ेगा,
उसका नामो-निशान मिटाना पड़ेगा।
युद्ध है तो जाना पड़ेगा,
युद्ध में बन्दे मातरम् फिर गाना पड़ेगा।
अब निकालो अपने म्यानों से
तलवार, शत्रु-खून से
विजय तिलक कर।
तिरंगा फहरा दो सीमापार।
हो उठा अब शंखनाद,
राष्ट्र की अब एक पुकार।।

- निशान्त मिश्रा
मो. : 8130082401

विद्यार्थी गुण पञ्चकम्

जीवन को सफल व सुयोग्य बनाने के लिए प्रत्येक बालक को विद्यार्थी जीवन अपनाना होता है। यह विद्यार्थी जीवन क्या है और इस जीवन को अपनाने हेतु किन गुणों की आवश्यकता होती है, प्रकाश डाल रहे हैं **मा. दिलीप बसंत बेतकेकर**

''ज्ञानतृष्णा, गुरौनिष्ठा,
सदाअध्ययन दक्षता।
एकाग्रता, महत्वेक्षा,
विद्यार्थी गुण पञ्चकम् ॥''

अगर कोई विद्यार्थी जीवन में सफलता चाहता है तो उसे अपने जीवन में ये पाँच गुण अवश्य लाने चाहिए। इस श्लोक में छात्र के पाँच गुण बताए गए हैं- ज्ञानतृष्णा, गुरुनिष्ठा, सदाअध्ययन दक्षता, एकाग्रता और महत्वाकांक्षा।

ज्ञानतृष्णा

ज्ञानतृष्णा इस श्लोक में सबसे पहले आया है, इसका अर्थ है ज्ञान की प्यास। जब तक आपके भीतर ज्ञान की प्यास नहीं होगी आप तब तक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। एक कहावत है कि ''आप घोड़े को पानी तक ले जा सकते हैं लेकिन पानी पीना या न पीना उसके ऊपर है।'' घर वाले आपके लिए धन की व्यवस्था करते हैं, आपकी ड्रेस बनवाते हैं । अध्यापक (आचार्य) आपको पढ़ाते हैं लेकिन जब तक आपके अंदर ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा नहीं होगी आप ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, ज्ञान लेना ये आपके ऊपर निर्भर करता है न कि अभिभावक या आचार्य पर। अँग्रेजी में एक कहावत है-"You can't teach him who does not wish to learn." यानि आप उसे नहीं पढ़ा सकते जो सीखना ही नहीं चाहता। यदि कोई कुछ पाना चाहता है तो उसे कोई भी नहीं रोक सकता। दो तरह की स्थितियाँ होती हैं। एक मन:स्थिति और दूसरी परिस्थिति। यदि किसी की मन:स्थिति अच्छी है और परिस्थिति खराब हो तो सफलता प्राप्त की जा सकती है लेकिन किसी की मन:स्थिति खराब हो और परिस्थिति अच्छी हो तो कोई उसे सफल नहीं करा सकता। मन:स्थिति अच्छी होना आवश्यक है।

'मन:स्थिति अच्छी तो विपरीत परिस्थिति कच्ची।'

आस्ट्रेलिया का एक गिर्यारोहक था मार्क इंग्लीस। एक दिन वो गिर्यारोहण के लिए पर्वत पर जाता है उसके दोनों पैर बर्फ में धँस जाते हैं सुनसान जगह होने के कारण उसके घुटने से नीचे का हिस्सा पूरी तरह से गल जाता है। डॉक्टरों को उसके दोनों पैरों को घुटने से नीचे काटना पड़ता है, उसके बाद वह संकल्प करता है कि इन पर्वतों पर चढ़ते समय मेरे दोनों पैर कट गए अब मैं दुनियाँ के सबसे ऊँचे पर्वत पर जरूर चढ़ूँगा। उसके बाद वह कृत्रिम पैर लगवाता है और उसने माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़कर एक नया रिकार्ड बनाया। ये सब संकल्प का कमाल था। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम के पास इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए पैसे नहीं थे। इतनी विपरीत परिस्थिति थी उनकी, लेकिन जब उनकी बहन ने उन्हें अपना सोने का कंगन दिया और कहा कि तुम इस कंगन को बेचकर अपनी फीस भरो तब उनके मजबूत इरादे और ज्ञान की तृष्णा का ही सुपरिणाम था कि उसके बाद की पढ़ाई उनकी छात्रवृत्ति से सम्पन्न हुई।

गुरुनिष्ठा

गुरुनिष्ठा से मतलब आचार्यो के प्रति सम्मान। आचार्यों के पैर छूने से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन इससे हमारी शालीनता, हमारी विनम्रता दिखती है। इससे आपको उनका आशीर्वाद तो मिलता ही है। साथ में बहुत से लोगों की मंगलकामनाएँ आपको मिलती हैं। इसलिए हमें अध्यापकों का सम्मान जरूर करना चाहिए।

सदा अध्ययन दक्षता

हमेशा अध्ययन में लगे रहो, हमेशा नया सीखने को तैयार रहो। एक बच्चा स्कूल की ड्रैस में बस के इंतजार में बस स्टाप पर खड़ा है तभी एक व्यक्ति वहाँ से गुजरता है और उससे पूछता है "Do you go to school? क्या तुम स्कूल जा रहे हो? तो बच्चा जबाब देता है "No, I am sent to school?" नहीं, मैं स्कूल नहीं जा रहा मुझे स्कूल भेजा जा रहा है। इसका मतलब यह है कि बच्चा मन से स्कूल नहीं जा रहा है उसे जबरदस्ती भेजा जा रहा है। ऐसी सोच से सफलता नहीं प्राप्त हो सकती । ऐसा लगता है कि वह किसी दूसरे के लिए स्कूल जा रहा है।

एकाग्रता

जीवन में यदि हमें कुछ सीखना है तो अपने जीवन में एकाग्रता लानी पड़ेगी। सम्पूर्णानन्द जी ने कहा है कि ''एकाग्रता सम्पूर्ण ज्ञान की कुंजी है।'' स्वामी विवेकानंद जी की एकाग्रता के बारे में सब जानते ही हैं। उनके गुरु भाई रोज़

उनके लिए पुस्तकालय से पुस्तकें लाते थे और अगले दिन उसे जमा करा देते थे। इससे पुस्तकालय के प्रमुख ने एक दिन कहा कि मुझे लगता है कि वे मुझसे फालतू की मेहनत कराते हैं और पुस्तकों को केवल वैसे ही ले जाते हैं। इस पर विवेकानंद जी ने उसे सारी पुस्तकों के उत्तर दिए और वो भी पृष्ठ क्रमांक के साथ ये उनकी एकाग्रता का ही कमाल था। एक और उदाहरण विवेकानन्द जी का मिलता है जब वे अमेरिकी प्रवास पर थे। एक दिन वह समुद्र के किनारे जाते हैं वहाँ वह देखते हैं कि कुछ बच्चे बन्दूक से "Egg shell" पर निशाना लगाने की कोशिश कर रहे थे लेकिन निशाना नहीं लग पर रहा था। विवेकानंद जी के चेहरे पर अचानक मुस्कराहट आ जाती है। बच्चे समझते हैं ये हमें चिढ़ा रहे हैं और उनसे कहते हैं कि क्या आप निशाना लगा सकते हैं? स्वामी कहते हैं हाँ, क्यों नहीं? और बन्दूक लेकर निशाना लगाने लगते हैं और सारे निशाने सही लगते हैं। बच्चे कहते हैं कि क्या आपने निशाना लगाना कहीं सीखा है? तो विवेकानंद जी ने कहा–नहीं तो। इससे पता चलता है कि उनकी एकाग्रता कैसी थी और हमारी कैसी होनी चाहिए। विवेकानंद कहते थे कि यदि मुझे दुबारा स्कूल जाने को मिले तो मैं फिज़िक्स या अन्य विषय नहीं पढ़ूँगा बल्कि एकाग्रता का अभ्यास करूँगा। क्योंकि जिस समय मैं पूरा एकाग्र हो जाऊँगा तो सभी विषय अपने आप सरलता से मुझे याद हो जाएँगे।

महत्वाकांक्षा

महत्वाकांक्षा से मतलब ''मुझे जीवन में कुछ करना है'' हमें हमेशा अपना लक्ष्य अपने सामने रख कर चलना चाहिए। "There should be ambition in our life." हमारे समाज में बहुत से उदाहरण हैं जिन्होंने अपने बचपन से ही बड़ा लक्ष्य रखा। विल्मा रूडोल्फ बचपन से ही विकलांगता की शिकार थी। लेकिन उनके जीवन का एक लक्ष्य था कि वे एक धावक बनना चाहती थीं। एक दिन वो अपने स्कूल कोच के पास गई और कहने लगीं कि मैं विश्व की सबसे तेज धावक बनना चाहती हूँ कोच एक दम अचंभित होता है कि एक विकलांग लड़की और सबसे तेज धाविका बनने का सपना। लेकिन वो कहता है कि मुझे तुम्हारी आँखों में एक सपना, एक लक्ष्य, एक भावना दिख रही है, इसलिए मैं तुम्हें कल से ट्रेनिंग दूँगा और उसके बाद रूडोल्फ अपने पैरों में लगी रॉड निकाल देती है और अभ्यास में लग जाती है, दिन-रात के कठोर अभ्यास के बाद वह 1960 में एंड्री नामक उस समय के सबसे तेज धावक को हराकर विश्व चैम्पियन बन जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमें ये पाँचों गुण अपने अन्दर विकसित करने चाहिए।

अक्सर बच्चों को कहा जाता है "You are useless" लेकिन मैं मानता हूँ "You are not useless but You use less" मतलब आप बेकार नहीं बल्कि आप अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का पूर्ण उपयोग नहीं करते हैं । एक दिन में हमारे भीतर लगभग 60,000 विचार आते हैं जिनमें से लगभग 95 प्रतिशत नकारात्मक विचार होते हैं। यदि हम इन नकारात्मक विचारों को सकारात्मक बना लें तो हम अवश्य सफल हो जाएँगे।

अ० भा० उपाध्यक्ष, विद्या भारती
मो०-94224 48698
dilipbetkekar@gmail.com

अभिनन्दन का अभिनन्दन है!

अभिनन्दन का अभिनन्दन है।
रक्त नहीं, मुख पर चंदन है।
अभिनन्दन का अभिनन्दन है।

लड़ा वतन की खातिर प्यारा,
फँसा हुआ दुश्मन दल में।
जोश देख कर वीर शेर का,
कमी नहीं लगती बल में।
रहे सलामत वीर हमारा,
कृपा श्री रघुनंदन है।
अभिनन्दन का अभिनन्दन है।

गगन भेद कर मीलों जाता,
पुनः पुनः सकुशल वह आता।
आज समय कुछ आया खोटा,
और हुआ दिल सबका छोटा।
अभी ना हिम्मत हारो मित्रो,
साथ देवकीनन्दन है।
अभिनन्दन का अभिनन्दन है।

जीवन - मृत्यु 'अटल' सत्य है,
देखा जाता मगर कृत्य है।
मातृ भूमि की करे सुरक्षा,
करे भगवती उसकी रक्षा।
सैनिक सदा पूजनीय सबका,
जैसे गौरी नंदन है।
अभिनन्दन का अभिनन्दन है।

विंग कमांडर अभिनन्दन की सलामती के लिए सभी दुआ करते हैं।

जय जवान। जय माँ भारती।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के अध्यक्ष मा. दीनानाथ बत्रा से वार्ता के अंश

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के पूर्व महामंत्री (1991-2004) को विद्या भारती के कार्य से जोड़ने का श्रेय मा. माधव रावजी मुले को है, जिन्होंने गीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र को संभालने का परामर्श दिया। इस प्रकार मा. बत्रा जी का सम्बंध विद्या भारती से जुड़ गया। प्रस्तुत है विद्या भारती के चिंतन को दिशा देने वाली उनकी यात्रा के अनछुए अनुभव....

सम्पादक : महोदय, विद्या भारती से आपका सम्बंध कब और कैसे जुड़ा?

बत्रा जी : तिथि आदि तो याद नहीं, पर जब मैं डी.ए.वी. संस्था में अध्यापक के दायित्व पर था। समिति कुछ उलझनों में थी। मैं सदा आचार्य के अधिकार के लिए लड़ा हूँ। अत: उस समय भी मैं ऐसी स्थिति में था। समस्याओं का निराकरण हुआ और उस समय समिति के अध्यक्ष रिटायर्ड चीफ जस्टिस श्री मेहरचंद महाजन ने मेरे एक पत्र के उत्तर में मुझे डी.ए.वी. स्कूल चण्डीगढ़ के प्राचार्य के पद पर नियुक्ति का पत्र दिया जो मैंने नारायण दास को दे दिया था। एक माह बाद सोनीपत की ओ.टी.सी. में मा. माधवराव मुले जी ने मुझे डी.ए.वी. छोड़कर गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र का दायित्त्व सम्भालने का परामर्श दिया। इस प्रकार मैंने गीता विद्यालय का कार्य सम्भाला।

सं:- गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र के अपने शैक्षिक अनुभवों से हमारा परिचय कराने का कष्ट करें।

बत्रा जी:- जब मैं आया, तब विद्यालय कक्षा प्रथम से दसवीं तक था। आचार्यों के वेतन की प्रबल समस्या थी। स्थिति इतनी खराब थी कि विद्यालय को बंद करने के सुझाव आते, जिस विद्यालय का शिलान्यास पूजनीय श्रीगुरुजी ने किया हो उसे बंद करने को मैं कतई सहमत न था। समिति बनाई गई मैं भी उस समिति में था, चर्चा हुई और मा. माधव राव जी ने मुझे विद्यालय को खड़ा करने की चुनौती स्वीकार करने का आदेश दिया।

सं.- इस चुनौती को आपने स्वीकार तो किया परन्तु आर्थिक समस्या का हल किस प्रकार निकाला?

बत्रा जी:- मैंने आचार्यों को वेतन नियमित रखने का विश्वास दिलाया तथा उन्हें विश्वास में लेकर कुछ नियम, कुछ सुधार, कुछ प्रयोग प्रारम्भ कर दिए, धीरे-धीरे परिस्थिति सुधरी, गाँवों में सम्पर्क बढ़ा, छात्रावास में बालक रहने लगे। हरियाणा में गीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र का नाम पहचान में आया।

सं.- आचार्यों के सहयोग व योजनाओं का परिचय देने का कष्ट करें, महोदय।

बत्रा जी:- आचार्य के विकास के कार्यक्रम प्रारम्भ किए। देश-विदेश के लेखकों की पुस्तकें पढ़ीं, विद्यालय में नई-नई गतिविधियों की योजनाएँ बनाने लगा। परिणामत: सरकारी आयोजनों व समिति में हमें स्थान मिला। हरियाणा शिक्षा बोर्ड का मैं सदस्य रहा। एन.सी.ई.आर.टी. की मॉरेल एजुकेशन कमेटी का तथा वाकेशनल एजुकेशनल कमेटी में सदस्य रहा। इसी बीच आपात्काल घोषित हुआ और राजनीतिक षड्यंत्रों के कारण बहुत सी समस्याओं से जूझना पड़ा। परन्तु अन्त में हर समस्याओं से मुक्त हो अपने शैक्षिक प्रयोगों एवं अध्ययन में जुट गया।

एक विद्यालय से आठ विद्यालय हरियाणा में प्रारम्भ किए। गीता निकेतन व बालिका विद्यालय उन्हीं में से हैं। शिशु मंदिर भी प्रारम्भ किए ताकि शिशुओं को प्रारम्भ से ही संस्कारयुक्त शिक्षा प्राप्त हो सके। मैं शिक्षा में Innovation के प्रति बहुत सजग सदा से ही हूँ। अत: कक्षा से बाहर की शिक्षा मेरे प्रयोगों का अभूतपूर्व अंग रही। पुस्तक से जीवन तक का बालक का सफर कैसा हो व उसे किस प्रकार दिखाया जाए इस पर चर्चा, विचार व क्रियान्वयन किया। शिक्षा सप्तपदी यात्रा है इसके अंग हैं :- (1) बालक, (2) बालक का व्यक्तित्व, (3) समाज, (4) राष्ट्र, (5) विश्व, (6) जड़-चेतन व (7) आध्यात्मिकता।

शिक्षा को पुस्तक तक ही सीमित न रखकर शरीर, प्राण, मन, बुद्धि व आत्मा से जोड़ना चाहिए। अत: आचार्यों के सहयोग से पाठ्यक्रम तैयार किया जिसका आधार बनाया शारीरिक शिक्षा, योग शिक्षा, संगीत शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान व नैतिक-आध्यात्मिक शिक्षा।

'Education is illumination' शिक्षा द्वारा बालक का अन्तस प्रकाशित हो

और वह सही-गलत का निर्णय कर पाए।

अत: पाठ्यक्रम को छपवाकर विद्यालयों में वितरित किया गया। आचार्यों के वर्ग लगाकर उन्हें पाठ्यक्रम की जानकारी देने का कार्य हुआ।

शिक्षा का जो प्रेषण हो रहा है, उसका मूल्यांकन भी अत्यंत आवश्यक है। छात्र, आचार्य व प्रबंधन स्तर पर इन सभी में सामंजस्य व समरसता होना भी अनिवार्य है अत: उसकी भी योजना बनी। आचार्य का आचार्यत्व भी अनुसरण योग्य हो अत: आचार्यों के विकास हेतु भी पाठ्यक्रम बनाया गया। आचार्य को बोध हो 'मैं एक आचार्य हूँ, मेरा ध्येय पढ़ाना है। वह केवल अक्षर-ज्ञान न कराए, गुणात्मक विकास करे; अपना भी छात्र का भी। वह भीड़ से अलग दिखे।

भारतीय शिक्षा का उद्देश्य बालक को भारतीय संस्कृति से अवगत कराना, चारित्रिक विकास, भारतीय चिंतन, शास्त्र व ग्रंथों से परिचित करवाना, आध्यात्मिक भाव जगाना अर्थात् जीवन मूल्यों की शिक्षा और उसके लिए आचार्यत्व जगाना भी एक विशेष अनिवार्यता है ताकि शिक्षा की चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना किया जा सके। आचार्य को प्रतिबद्ध होना चाहिए

"Committed (1)To self, (2) To profession, i.e. learning, books, students & mission (3) subject i.e. depth (4) students not students but son/daughter and (5) society.

सं.-आपके प्रयोग व शिक्षा सम्बंधी अध्ययन में आपके विद्यालयी आचार्य सहयोगी बने। आपके अनुसार विद्यालय की परिभाषा क्या है?

बत्रा जी- विद्यालय केवल पाठ्यक्रम पूर्ण कराने का स्थान न होकर गतिविधियों का आलय होना चाहिए। इसी नाम से मैंने एक पुस्तक लिखी है। आपको अध्ययन करने के लिए दूँगा।

वास्तव में समाज में परिवर्तन प्रक्रिया, सांस्कृतिक आदान-प्रदान की शिक्षा, आचार्यों का परिवारों से सम्पर्क व सम्बंध, कुटुम्ब प्रबोधन आदि विद्यालय की गतिविधियों का हिस्सा बने। राष्ट्र जीवन समरस, सुसंस्कृत व सुसम्पन्न बनाना शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए।

सं.- सभी बिन्दुओं का क्रियान्वयन करने के पश्चात् किस प्रकार निर्णय किया जाए कि शिक्षा का उद्देश्य सफल हुआ?

बत्रा जी:- इसके लिए समुचित मूल्यांकन प्रक्रिया की व्यवस्था होनी चाहिए। मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग हैं :-(1) शैक्षिक उद्देश्य, (2) सीखने के अनुभव, (3) व्यावहारिक परिवर्तन।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विद्यालयीन शिक्षा परीक्षा व मूल्यांकन हेतु अनेक समितियाँ तथा आयोग गठित किए गए परन्तु उनकी अत्यंत महत्त्वपूर्ण संस्तुतियों पर कोई कार्य नहीं हुआ बल्कि सब अलमारी में बंद। हम जड़ हो गए हैं। कोई शोध नहीं कोई समीक्षा नहीं, कोई चिंतन नहीं। मेरी विद्यालयीन शिक्षा में शिक्षा, परीक्षा, मूल्यांकन की त्रिवेणी पुस्तक आप पढ़ना। बालकों के लिए भी प्रेरणादायक संकलन मैंने पुस्तकों के रूप में किया है। साथ ही गरीब पिछड़े वर्गों की शिक्षा हेतु 'संस्कार केन्द्र' की विशद् व्याख्या हेतु पुस्तक लिखी है।

सं.- आपके भारतीय शिक्षा हेतु अत्यंत संघर्षशील अभियान की चर्चा रही है। भारतीय शिक्षा की पुस्तकों में आपत्तिजनक प्रसंग टिप्पियों को चिन्हित कर आपने 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' के माध्यम से अपने चिंतन को देश के समक्ष रखा। उसके विषय में कुछ कहना चाहेंगे।

बत्रा जी- हाँ न्यास ने जनसभाओं, हस्ताक्षर अभियान, छोटी-छोटी पुस्तिकाओं, समाचार पत्रों तथा कानूनी कार्यवाही करते हुए भारतीय शिक्षा, संस्कृति, धर्म, भाषा, इतिहास के प्रति सही सोच विकसित की है। जिन जानकारियों को गलत परोसा जा रहा था उससे सम्बंधित सत्य व तथ्य प्रस्तुत किए हैं। ऐसे ही कुछ तथ्य मैंने ''राष्ट्रवादियों को आतंकवादी मत बताओ'' नामक पुस्तक में संकलित किए हैं।

सं.- वर्तमान में विद्या भारती की दशा व दिशा पर कोई टिप्पणी करना चाहेंगे?

बत्रा जी- विद्या भारती अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है। इसमें नए व युवा कार्यकर्ताओं के साथ समसामयिक आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखने का प्रयास है।

सं.- भावी आचार्यों को संदेश देना चाहेंगे?

बत्रा जी- सर्वप्रथम आचार्य स्वयं को जानें, भारत को जानें, पाठ से नि:सृत मूल्य बालकों तक पहुँचाएँ, आदर्श विद्यार्थी की सूची बनाएँ व उन्हें आदर्श रूप में प्रस्तुत करें तथा माता-पिता को इसकी सूचना अवश्य दें।

सबसे अच्छी पाठ्यशैली संवादात्मक शैली है। बालक पर ज्ञान थोपना नहीं चाहिए।

भारतीय वैज्ञानिक, नीतिज्ञ, ऋषि-मुनि, चिंतक, दार्शनिक पाठ्यक्रम का

अंग बनें।

एक ही विषय की प्रस्तुति अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करने का स्वभाव बने।

विषय समाप्ति पर बिन्दु देकर बालक से विचार प्रस्तुत करने को कहें।

आशुभाषण को अधिकतम प्रयोग में लाएँ।

प्रार्थना सभा में मौन, लघु कथा, प्रेरक प्रसंग तथा विषय प्रस्तुति के बाद प्रश्नोत्तर का अभ्यास बने। यह सभी 30 मिनट में अवश्य हो। विद्यार्थियों को प्रभावशाली व्यक्तित्व से मिलवाया जाए। प्रत्येक को दो पृष्ठ अवश्य अध्ययन करना चाहिए। मासिक बैठक में एक आचार्य द्वारा विषय की प्रस्तुति को कहा जाए।

सं.- कृपया एक वाक्य में अपनी शैक्षिक जीवन यात्रा को समेटें ।

बत्रा जी- दोहरा अध्ययन-जीवन और लक्ष्य का अनवरत चलना चाहिए।

सं.- धन्यवाद महोदय, अपने अमूल्य समय में से जो अमूल्य मोती प्रदान किए हैं यह भावी पीढ़ी के लिए अनमोल साबित होंगे, मुझे विश्वास है।

कौशल का महत्व

एक व्यक्ति अपने काम को परिश्रम और कुशलता से करता है, तो उसकी प्रगति, कार्य से संतुष्टि एवं समाज का सम्मान अवश्य मिलता है। चाहे कार्य छोटा या बड़ा कोई भी हो। इस सम्बन्ध में एक बोध कथा पढ़ने को मिली, उसी को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

एक मंदिर था, उसमें सब लोग पगार पर थे। आरती करने वाला, पूजा कराने वाला पुजारी, घंटा बजाने वाला आदमी भी पगार लेता था। घन्टा बजाने वाला आरती के समय इतना तल्लीन होकर भाव में मस्त हो जाता था कि उसे होश भी नहीं रहता था। घंटा बजाने वाला व्यक्ति पूरे भक्ति भाव से अपना काम करता था, मंदिर आने वाले सभी भक्त भगवान के साथ-साथ घंटा बजाने वाले व्यक्ति के भाव के भी दर्शन करते थे। उसकी भी वाह-वाह होती थी।

एक दिन मंदिर का ट्रस्ट का प्रबंधन बदल गया, और नये ट्रस्टी ने आदेश दिया कि अपने मंदिर में कार्य करने वाले सब लोग पढ़े-लिखे होने चाहिए, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा। उस घंटा बजाने वाले व्यक्ति को ट्रस्टी ने कहा 'तुम आज तक का पगार ले लो, आज के बाद तुम नौकरी पर मत आना, उस घंटा बजाने व्यक्ति ने कहा, साहेब मैं भले ही पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। परन्तु इस कार्य में मेरा भाव भगवान के साथ जुड़ा हुआ है।

देखा! ट्रस्टी ने कहा ''सुन लो, तुम पढ़े-लिखे नहीं हो, इसलिए तुम्हें अब नहीं रखा जाएगा।'' दूसरे दिन मंदिर में नए लोगों को रख लिया गया। परन्तु आरती में आए भक्तों को अब पहले जैसा आनंद नहीं आया था। घंटा बजाने वाले व्यक्ति की कमी सब ने महसूस की। कुछ लोग मिलकर घंटा बजाने वाले के घर गए और विनती की कि मंदिर में आओ।

उस भाई ने जबाब दिया 'मैं आऊँगा तो ट्रस्टी को लगेगा कि नौकरी माँगने आया है, इसलिए मैं नहीं आ सकता। वहाँ आए लोगों ने एक उपाय बताया कि 'मंदिर के सामने आपके लिए एक दुकान खोल देते हैं। वहाँ आपको बैठना है और आरती के समय घंटा बजाने के लिए आना है। फिर कोई नहीं कहेगा कि तुमको नौकरी की जरूरत है।

उस भाई ने मंदिर के सामने दुकान शुरू कर दी। दुकान इतनी चली कि एक दुकान से सात दुकान और एक फैक्ट्री खोल ली। अब वो आदमी मर्सिडीज़ से घंटा बजाने आता था। समय बीतता गया वह बात पुरानी सी हो गई। मंदिर का ट्रस्ट का प्रबंधन फिर बदल गया। नये ट्रस्टी को नया मंदिर बनाने के लिए दान की जरूरत थी। मंदिर के ट्रस्टी ने विचार किया कि सबसे पहले उस फैक्ट्री के मालिक से बात करते हैं। ट्रस्टी मालिक के पास गया व फैक्ट्री के मालिक को बताया कि सात लाख का खर्चा है। फैक्ट्री के मालिक ने बिना कोई विचार किए एक खाली चैक ट्रस्टी को थमा दिया और कहा कि चैक भर लीजिए । ट्रस्टी ने चैक भरकर उस फैक्ट्री मालिक को वापस दे दिया। फैक्ट्री मालिक ने चैक देखा और उस ट्रस्टी को दे दिया। ट्रस्टी ने हाथ में चैक लेकर कहा कि हस्ताक्षर तो अभी बाकी है। मालिक ने कहा मुझे हस्ताक्षर करना नहीं आता लाओ अँगूठा लगा देता हूँ। वही चलेगा।

ये सुनकर टस्ट्री चौंक गया और कहा ''साहेब'' आपने अनपढ़ होकर इतनी तरक्की की। यदि पढ़े लिखे होते तो कहाँ होते !!! तो वह सेठ हँसते हुए बोला, भाई, मैं पढ़ा लिखा होता तो बस मंदिर में घंटा बजा रहा होता।

- जैन पाल जैन,
साहिबाबाद (उ०प्र०)

कैसा प्रजातन्त्र!!!

जब हम किसी नए कार्य को प्रारम्भ करते हैं, नई खोज करते हैं अथवा आविष्कार करते हैं। उसमें सुधार व नवाचार की गुंजाइश रहती है, इस दृष्टि से प्रस्तुत लेख में प्रजातंत्र पर चिन्तन-मनन करने का संकेत दे रही हैं **श्रीमती सविता कुलश्रेष्ठ**

कसम तुम्हारी जब आऊँगा,
तब ही होगा वैलेण्टाइन।
और गुलाब तभी महकेगा,
जब सब होंगे फ़िट एण्ड फ़ाइन॥

न्यूज चैनल्स पर पुलवामा त्रासदी के बाद लगातार शहीदों के परिवारों से जो बातचीत हो रही है अधिकतर यही भाव व्यक्त हो रहा है। फोन पर बातचीत हुई थी आने का आश्वासन दिया, बच्चों के लिए ये करने का विचार बताया, घर के लिए वह करने का विचार बताया। सौ बात की एक बात देश की रक्षा के लिए मृत्यु-वरण को सज्ज सैनिक की भी दिनचर्या में खुशी के पल केवल उसके परिवार के साथ ही होते हैं।

वैलेण्टाइन का जो स्वरूप आज दिख रहा है यह व्यवसायिकता है। वास्तव में संत वैलेण्टाइन ने दूसरों की खुशी एवं हित के लिए अपना बलिदान दिया था इस दृष्टि से इसे वैलेण्टाइन के शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए था। परन्तु व्यापार के लिए मनुष्य ने बहुत सी प्राचीन घटनाओं व पम्पराओं में हेर-फेर किया है। कोई नोट कमाने के लिए करता है और कोई मौज उड़ाने के लिए स्वीकार करता है। किसको पड़ी है किसी की भावना की।

उसी संत वैलेण्टाइन के शहीदी दिवस पर 40 सैनिक शहीद हुए हमारी सुरक्षा और खुशहाल जीवन के लिए। समाचार में खुलासे के नाम पर कुछ जानकारियाँ सामने आई कि जहाँ से ड्यूटी पर जाने वाले सैनिकों का वाहन निकलना था वहाँ किसी प्रकार की विशेष सुरक्षा नहीं थी, परन्तु जब नेता कहीं से निकलते हैं तो पूरी सड़क बन्द कर दी जाती है जैसे राजा की सवारी हो, नाम का प्रजातन्त्र !!

जनता द्वारा चुने गए नेताओं को जनता से खतरा। यह सुरक्षा, वह सुरक्षा। कितना धन और बल इस व्यवस्था में लगाया जाता है। नेता सुरक्षित रहना चाहिए, जनता की सुरक्षा की उसकी जिम्मेदारी नहीं। देश की सुरक्षा के लिए सेना; जिसे इसी के लिए तैयार किया जाता है कि उन्हें देश की रक्षा में बलिदान होना है। जब राजा की सेना होती थी तो राजा स्वयं भी युद्ध क्षेत्र में जाता था। इतिहास गवाह है कि बहुत से राजाओं ने अपने प्राण भी दिए। पर कोई नेता नहीं जाता।

अब तो बड़ी बढ़िया व्यवस्था है शान से और आराम से जियो; अगर जनता ने चुनकर नेता बना दिया है। एक दूसरी पार्टी के लिए विवादित बयान देते रहो। संसद में चर्चा के बजाय मोहल्ले की लड़ाई लड़ो। क्या कहने हैं प्रजातन्त्र के! जिसका पलड़ा भारी उसी पार्टी में घुस जाओ। दूसरी पार्टी के लोगों को लालच देकर, तोड़कर अपनी पार्टी में लाओ। यह कैसा प्रजातन्त्र? ऐसे अवसर वादियों से कौन से दायित्व या ईमान की अपेक्षा की जा सकती है?

सैनिकों से जब संवाददाता ने पूछा क्या होना चाहिए? तो उसने पटाक से नहीं कहा 'ईंट का जवाब पत्थर से' वह बेचारे यही कहते रहे कि योजना बनेगी, विचाराधीन है। जबकि नेता कभी भी किसी के लिए अवांछनीय बातें भी बोल जाते हैं। नेता अपनी संतानों को राजनीति का लाभ तो दिलाते हैं परन्तु सेना में नहीं भेजते। बलिदानों पर आश्वासन फिर सब ठंडा।

पहले से सेना सुरक्षा की योजना, चिन्ता, व्यवस्था क्यों नहीं की जाती? जैसे नेताओं को जीवित रखने के लिए ब्लैक कमाण्डो होते हैं। मतलब देश चलाने के लिए किसी को मौत का Motivation और किसी को मौज का Invitation।

बड़े विचारक, स्कॉलर हैं इस संसार में पर किसी ने इस प्रजातन्त्र की खिचड़ी की 'रैसिपी' का निरीक्षण किया है। कैसे जनता के कंधों पर बैठ कर विश्व देखने और विश्व में ऊँचाई पर नजर आने वाले किसी के सुहाग और किसी के बच्चों के अंधकारमय भविष्य पर जीवन का आनन्द लेते हैं, चौधरी बनते हैं, निर्णायक होते हैं, पूज्य होते हैं, आदरणीय होते हैं। यदि थोड़ी बहुत प्रजातन्त्र की इज़्ज़त रखनी है तो शहीदों के परिवार का दायित्व भष्ट्राचार नहीं ईमानदारी से निभाया जाए और समय-समय पर इसकी सूचना मीडिया के माध्यम से जनता को दी जाए क्योंकि अब शहीदों के बच्चे देश की धरोहर हैं। उनके भविष्य को सँवारने वाला, स्वप्न देखने वाला पिता देश पर बलिदान हुआ है। तब तो थोड़ा बहुत कर्ज उतरेगा और नेताओं के कार्यों से पुण्य अर्जित होगा। जनता को लगेगा कि वह समझदार है और सही चुनाव करती है। नहीं तो जनता मूर्ख ही घोषित होती रहेगी और फिर एक ही प्रश्न बार-बार पीड़ा देगा 'यह कैसा प्रजातन्त्र?

पूर्व महामंत्री मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल से सम्पादक की वार्ता

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के विकास एवं सफल यात्रा के एक संघर्षशील राष्ट्रभक्त यात्री मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल ने विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री का दायित्व को सन् 2007 से 2013 तक अपने कुशल प्रशासन व सोच से ऊचाइयों की ओर अग्रसर किया। प्रस्तुत है उनसे हुए वार्तालाप से अनमोल अनुभव जो अपने कार्यकर्ताओं के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

संपादक: मान्यवर, सर्वप्रथम आपके जन्म, शिक्षा व बाल्यकाल के स्मृति-पल के सम्बंध में जानना चाहूँगी।

रावल जी: चीतावतनी पश्चिमी पाकिस्तान, मिन्टगुमरी में 15 नवम्बर, 1940 को मेरा जन्म हुआ। हमारे पिताजी हिन्दु विचारधारा से रचे-पचे थे। देश झंझावातों से गुज़र रहा था। 1947 में भारत-विभाजन के कारण हमारा परिवार हरियाणा में आकर बस गया। यहीं पर मैंने अपनी विद्यालयी शिक्षा पूर्ण कर विज्ञान विषय में स्नातक की शिक्षा ग्रहण की।

10 वर्ष की आयु में शाखा में जाना प्रारम्भ कर दिया था अत: स्नातक करते-करते मुझे संघ के विस्तार का दायित्व मिला। गोहाना के हरियाणा पब्लिक स्कूल में विज्ञान आचार्य के नाते कुछ समय कार्य किया। फिर बी. एड. करने के पश्चात् पुन: विज्ञान आचार्य का दायित्व निभाया। राजनीति शास्त्र से एम.ए. करने हेतु मैं कुरुक्षेत्र आ गया। मुझे 1968 में दिल्ली में शिक्षा विभाग में विज्ञानाचार्य के रूप में चयनित किया गया परन्तु प्रान्त प्रचारक मा. द्वारिकानाथ जी के आग्रह पर एम. ए. के बाद 11 जनवरी 1965 को मैंने हलवासिया विद्या विहार, भिवानी में प्राचार्य का दायित्व सम्भाला और अपने जीवन के 40 वर्ष वहाँ समर्पित किए।

सं.:- मान्यवर, विद्या भारती से किस प्रकार आपका सम्पर्क हुआ?

रावल जी:- सन्1978 में जब विद्या भारती का गठन हुआ। अब तक चल रहे विभिन्न प्रांतों में विभिन्न समितियों के विद्यालयों को इकट्ठा कर एक मंच पर लाने का विचार बना साथ ही दिल्ली/हरियाणा के लिए हिन्दु शिक्षा समिति का गठन हुआ तो संघ की प्रेरणा से मैं उसका सदस्य बना। इसी समय प्राथमिक शिशु मंदिरों के छात्रों के एक शिशु शिविर की दिल्ली में आयोजन की योजना बनी। उसमें मेरी प्रतिभागिता रही। विद्या भारती के गठन होने पर पहले मा. दिलीपचन्द जी (एडवोकेट) विद्या भारती के पहले अध्यक्ष बने। इसी श्रृंखला में भिवानी के जिला कार्यवाह तथा प्रांत बौद्धिक प्रमुख का दायित्व मुझे सौंपा गया। इस प्रकार सन् 2002 तक विद्या की विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों में जुड़ा रहा। अप्रैल 2002 में विद्या भारती कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में जुड़ा। गोहाना विद्यालय व भिवानी विद्यालय की गतिविधियों को मैंने पूरी ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाया। मेरे अग्रज मा. दीनानाथ बत्रा जी की प्रेरणा से विद्या भारती निर्धारित कार्यक्रम व योजनाओं का सफल क्रियान्वयन किया। अन्य सामाजिक दायित्वों का विद्यालयी योजनाओं व गतिविधियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने दिया। हम लोगों की प्रतिबद्धता उस समय ऐसी ही थी। प्रत्येक कार्य हम निष्ठा से और समय से करते थे। विद्या भारती के सर्वांगीण विकास के चिंतन का विद्यालयों में सफल प्रयोग किया गया।

सं.- मान्यवर, शिक्षा क्षेत्र में कोई विशेष घटना या उपलब्धि या स्मृत्ति आपके मानस पटल पर हो और आप साझा करना चाहते हों।

रावल जी:- विद्यालय में गतिविधियों की कार्यान्विति करते हुए अपने विद्यालय में छात्रों को शत प्रतिशत उपस्थिति के लिए उत्साहित किया जो उन्हें प्रतिबद्धता की ओर अग्रसित करे। यह प्रयोग इतना सफल हुआ कि एक छात्र टाँग में प्लास्टर होने के बावजूद शत प्रतिशत उपस्थित रहा। यह केवल उसके लिए उपलब्धि नहीं थी अपितु उसने दूसरे छात्रों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया था।

एक और बहादुर तथा प्रतिबद्ध छात्र की चर्चा करूँगा-सत्येन्द्र सांगवान, 1999 के कारगिल युद्ध में वह टाइगर हिल पर तैनात था, वहाँ ब्लास्ट हुआ और उसने अपनी एक टाँग खो दी। आज वह कृत्रिम पैर से अपना जीवन सफलता पूर्वक जी रहा है। उसे जीवन से कोई शिकायत नहीं।

एक और मजेदार बात याद आ रही है बी.एड. से पूर्व जब गोहाना विद्यालय में कार्यरत था वहाँ गणपति शास्त्री जी नामक एक संस्कृत आचार्य थे उन्होंने मुझसे भिवानी प्रस्थान करते समय कहा था ''सफलता तो मिलेगी परन्तु अन्त अच्छा नहीं होगा''। सोचता हूँ शायद उनका संकेत इसी ओर था कि मैंने समय से पूर्व हलवसिया विद्या विहार छोड़कर हिन्दू शिक्षा समिति व सामाजिक गतिविधियों में अधिक समय दिया। भिवानी विद्यालय की गतिविधियों के सफलता के आयाम एनएसएस, एनसीसी का एयरविंग और स्काउट्स एण्ड गाइड्स का विद्यालय में होना भी है और साथ ही हरियाणा स्काउट्स एण्ड गाइड्स का सेक्रेटरी और बाद में ऑल इण्डिया सेक्रटरी ऑफ स्काउट्स एण्ड गाइड्स भारत और हिन्दुस्थान दोनों का रहा। वह समय और उसकी प्रतिबद्धता वर्णनीय है। 1965 के भारत-पाक युद्ध में कॉलेज के छात्र व आचार्य सामाजिक चुनौतियों के बराबर हिस्सेदार होते थे। 'ब्लैकआउट' के समय सुरक्षा की दृष्टि से सरकार की सहायता भी हमारी प्रतिबद्धता थी। अकाल के समय अनाज व कपड़े एकत्र करना हमें अपना दायित्व लगता था।

सं.- मान्यवर, आपकी बात से एक प्रश्न खड़ा हुआ-आपने कहा 'वह समय उसकी प्रतिबद्धता? स्पष्ट करेंगे।

रावल जी:- तकनीकी विकास हुआ अच्छी बात है परन्तु इस तकनीक ने वर्तमान में क्या दृश्य पैदा किया है। आज नर्सरी, कक्षा एक और दो के छात्र ट्यूशन पढ़ते हैं। बल्कि माता पिता इसमें अपना गौरव समझते हैं। परिणाम यह कि ट्यूशन की दुकानें चल रही हैं परन्तु विद्यालय को छात्र हल्के में लेते हैं। आचार्य का सम्मान नहीं। ऐसी स्थिति में आचार्य भी अपने कर्तव्य एवं सम्मान के प्रति लापरवाह हो रहे हैं उन्हें उनके दायित्व के प्रति जागरूक करना आज की महती आवश्यकता है। हमारी प्राथमिक कक्षाओं में (1947-1952) चारों वेद, उपनिषद्, रामायण और महाभारत के अंश आधारित सामग्री होती थी। हमारे एक केशधारी आचार्य थे वह सड़क पर पत्थर देखते तो तुरंत उसे किनारे रख देते। वे आचार्य थे अनुसरण योग्य। आज के बच्चे विद्यालय की उपस्थिति के प्रति सजग नहीं। आचार्य व अभिभावक भी इसके लिए चिंतित नहीं। मुझे याद आ रहा है तीसरी व चौथी कक्षा मैंने एक ही सत्र में की थी। इसके लिए मेरे हेडमास्टर व उप हेडमास्टर मुझे सहयोग करते थे। एक कक्षा के लिए एक के घर दूसरी कक्षा के लिए दूसरे के घर जाता। एक दिन हेडमास्टर ने मुझे सेकेण्ड हेडमास्टर के घर देख लिया बोले अच्छा तू यहाँ भी है। मैं डर गया शायद उन्हें पसंद नहीं आया कि मैं दोनों जगह जाता हूँ और मैंने उनके घर जाना बंद कर दिया। कुछ दिन बाद उन्होंने मुझे स्वयं टोका कि मैं उनके घर नहीं आता। जब मैंने सफाई दी तो हँस कर बोले 'मुझे तुम्हारी इतनी कटिबद्धता की प्रशंसा करनी थी।' और फिर मैंने उनके घर जाना प्रारम्भ कर दिया। यह था शिष्य और शिक्षक का अपनत्व परन्तु आज नहीं है। आज तो शिक्षा को ही गम्भीरता से नहीं लिया जा रहा है। न विषय न भाषा। बोलने में, लिखने में भी अत्यंत अशुद्धता आ गई है। एक उदाहरण हर जगह लिखा देखें - 'कृप्या करके'।

हमारे एक आचार्य थे जो कक्षा में एक ही चेतावनी देते थे कोई नोट्स नहीं लिखेगा। पूरे विषय को ध्यान से सुनो। परीक्षा की कॉपी देते तो पहले कम अंक वालों से शुरू करते। गृह कार्य देते तो अगले दिन ही कॉपियाँ इकट्ठी करते अभिभावक भी आचार्य का पूरा सम्मान करते। एक बार हम नहर पर नहाने चले गए, घर में माता पिता ने निर्णय लिया कि हेडमास्टर से शिकायत करेंगे। यह था घर में आचार्य का स्थान।

आज शिक्षा में जो ढील है उनकी चिन्ता नहीं की जा रही है। बच्चे कोचिंग क्लासेज में व्यस्त रहते हैं। सुबह से शाम तक मशीन! स्वाध्याय के लिए समय नहीं। अंक से तो सफल होते हैं परन्तु व्यक्तित्व से नहीं। कोचिंग से कोई डॉक्टर या इंजीनियर बन सकता है परन्तु अपने व्यक्तित्व से उस दायित्व का कितना निर्वाह करता है!

सं.- मान्यवर, आपको क्या लगता है इस स्थिति के लिए कौन उत्तरदायी है।

रावल जी:- इसके लिए आचार्य को चाणक्य की भाँति दृष्टि रखनी होगी। चाणक्य को किसी बोर्ड, सरकार या संस्था ने काम नहीं दिया था। बल्कि उसने अपने आप अपने दायित्व को स्वयं स्वीकार किया, प्रतिबद्धता को सर्वोपरि रख कर राष्ट्र और समाज के हित में कार्य किया। सरकार बदली, शिक्षा परिवर्तन की बात चली। राष्ट्रीय विचार के साथ शिक्षा तंत्र खड़ा होना चाहिए। दसवीं व बारहवीं की पुस्तकों में ऐसा कुछ नहीं है कि जिससे बालक भारत के बारे में यहाँ की विभूतियों के बारे में, महापुरुषों के बारे में जानें।

बालक का विकास आचार्य से होता है। अत: आचार्य का विकास होना चाहिए। संकल्पित आचार्यों का चयन होना चाहिए। शिक्षक बनना अंतिम लक्ष्य नहीं होना चाहिए। आचार्य को कटिबद्ध, प्रतिबद्ध होना अत्यंत आवश्यक है। चुनाव प्रणाली में सुविधाओं की बात नहीं होनी चाहिए। जब राजाओं का शासन था तब भी आपात्काल में सम्रग समाज चुनौती का सामना करता था। 1950-51 में जब रूस से खुश्चेव भारत आए थे तब सोनीपत में सड़क ठीक नहीं थी। सोनीपत के हिन्दू कॉलेज के छात्रों ने भी सड़क के गड्ढों में मिट्टी भरने का काम किया। शिक्षा में राष्ट्र और समाज के प्रति दायित्व का भी भाव रहना चाहिए। तब किया था छात्रों ने खुशी से।

1962 में भारत-चीन युद्ध के समय अनिवार्य एसीसी प्रारम्भ हुई। सामाजिक व राष्ट्रीय चुनौतियों के लिए बालक को तैयार करना है, एक जागरूक नागरिक बनाना है। प्रजातंत्र में बुरी बात यह है कि सुविधाओं की बात करके सरकारें बनती हैं और जनता उनके भरोसे बैठी रहती है।

सं.- आप कैसी शिक्षा की कल्पना करते हैं कि हमारे देश के नागरिक जागरूक व कटिबद्ध हों अपने देश के प्रति चाहे वे नेता ही क्यों न हों?

रावल जी:- शिक्षा राजनीति से अलग होनी चाहिए। स्वावलम्बी, शासन से दूर, सरकार से अलग। विद्या भारती का लक्ष्य भी इसी ओर संकेत करता है कि बालक का निर्माण देश समाज के प्रति समर्पण का हो। सरकार से शिक्षा संस्थान को सहयोग मिले परन्तु योजना व कार्यान्विति में सरकार का हस्तक्षेप न हो।

सं.- मान्यवर, आपकी एक पुस्तक विद्या भारती का लक्ष्य एवं आदर्श विद्यालय मैंने पढ़ी है। आदर्श विद्यालय की संकल्पना का सफल क्रियान्वयन कैसे हो सकता है?

रावल जी:- विद्या भारती ने जो योजना व नियम निर्धारित किए हैं बहुत चिंतन के बाद किए हैं। उनका अक्षरश: हृदय से पालन किया जाए तो विद्यालय अवश्य ही आदर्श विद्यालय बनेंगे। प्रमुख होने के नाते प्रधानाचार्य ही इसके लिए उत्तरदायी हैं। संस्था सक्षम कुशल व योग्य प्रधानाचार्य से ही पहचानी जाती है। वह प्रारम्भिक कक्षा से उच्चतर कक्षा तक के छात्रों के प्रति उत्तरदायी आचार्य व चिंतक है। सम्पूर्ण शिक्षण टोली व प्रशासनिक स्टाफ का मुखिया है। वह सम्पूर्ण शिक्षण इकाई के सब कार्यों के प्रति उत्तरदायी है। सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम की कार्यान्विति तथा सहपाठ्य गामी क्रियाओं में योजना बनाकर संतुलन बैठाना उसकी ही चिन्ता है। विद्यालय भवन, आवश्यक उपस्कर, आचार्य, कर्मचारियों की समर्पित टीम सब उसी का दायित्व है। टीम अर्थात् Totally engrossed in achievement mission. कार्यालय में फाइलिंग, लेखाकार्य, शिक्षा विभाग, परीक्षाबोर्ड तथा प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं की सम्पूर्ण जबावदेही प्रधानाचार्य के कार्य, दायित्व एवं कार्यकुशलता का मूल मंत्र है।

What ever is done with knowledge, faith and attitude of upasana becomes most vigorous & faithful. It gives best results.

सं.- मान्यवर, इस पुस्तक के अतिरिक्त 'समर्थ गुरु रामदास' पर एक आपकी हृदयग्राही पुस्तक मैंने पढ़ी है इसके अतिरिक्त और लेखन कार्य भी आपने किया होगा। बताने की कृपा करें।

रावल जी:- हाँ, संस्कृति शिक्षा संस्थान की संस्कृति ज्ञान परीक्षा की पुस्तकों में लेखन किया, वैसे भी लिखता रहता हूँ लेख इत्यादि।

सं.- मान्यवर, हिन्दू शिक्षा समिति के दायित्व के अतिरिक्त विद्या भारती में और क्या-क्या दायित्व आपने निवर्हन किए?

रावल जी:- क्षेत्र प्रचारक दिनेश जी के आग्रह से सन् 2002 मं उत्तरक्षेत्र के महामंत्री का दायित्व और सेवानिवृत्ति के पश्चात् सन् 2007 से विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री का दायित्व। विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप वनवासी बालकों की शिक्षा हेतु जनकल्याण शिक्षा न्यास का गठन हुआ था। उसमें अध्यक्ष का दायित्व। राष्ट्रीय महामंत्री के दायित्व के समय में प्रत्येक प्रांत में पाँच-पाँच विद्यालयों को आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित करने की योजना बनी। उसके लिए 10 बिंदु भी तैयार हुए। मेरे साथ उसमें श्री महेशचन्द पंत का सहयोग रहा।

जिस प्रकार बालक की संस्कृति ज्ञान परीक्षा होती है उसी प्रकार आचार्य को भी संस्कृति का समग्र ज्ञान होना चाहिए क्योंकि बालक का विकास आचार्य पर ही निर्भर है अत: आचार्य को समृद्ध होना चाहिए ताकि विद्यालय विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप आदर्श बने। इस हेतु आचार्य का सघन प्रशिक्षण, सामाजिक प्रतिबद्धता तथा संकल्प चाहिए।

सं.- मान्यवर, आप संकल्प से कैसे जुड़े?

रावल जी:- मैंने और संतोष तनेजा

जी ने बालकों को भावी प्रशासन हेतु निर्माण करने के लिए चिंतन किया और भिवानी के विद्यालय में सबसे पहले इसका प्रारम्भ हुआ। परन्तु इसमें विद्यालय से ऊपर की शिक्षा के छात्रों को तैयार करने का कार्य था अतः धीरे-धीरे इसे विकसित किया गया। वर्तमान में क्रिश्चयन कालोनी, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, धीरपुर और सैक्टर-4 रामकृष्णपुरम् में इसके लिए छात्रावास हैं जिसकी व्यवस्था श्री कन्हैयालाल जी देखते हैं। ये तीनों जनकल्याण, केशवसृष्टि और माधव सृष्टि न्यास के नाम से कार्य कर रहे हैं। प्रारम्भ में केवल मॉक इण्टरव्यू से ही कार्य प्रारम्भ किया परन्तु अब समुचित शिक्षण व्यवस्था की जा चुकी है। धीरपुर में ही कन्या छात्रावास निर्माण विचाराधीन है।

सं.- मान्यवर, विद्या भारती हेतु कोई परामर्श या मागदर्शन?

रावल जी:- और अधिक अपनत्व व मानवीय धरातल पर कार्य हो। तकनीक-प्रयोग साधन के रूप में हो।

सं.- मान्यवर, अपनी जीवन-यात्रा को एक वाक्य में व्यक्त करें?

रावल जी:- तन समर्पित मन समर्पित, और यह जीवन समर्पित।

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।

सं.- बहुत सुन्दर। निश्चय ही आपका यह साक्षात्कार पाठकों के लिए प्रेरणास्पद होगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

भारत सरकार के समाचार पत्रों के पंजीयन कार्यालय से सम्बन्धित

फार्म-4 (नियम 8 के अन्तर्गत जानकारी)

1.	प्रकाशन स्थल	:	प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरु नगर, नई दिल्ली-10065
2.	पंजीयन क्र0, प्रकाशन अवधि	:	37111/1981 , त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	डॉ०ललित बिहारी गोस्वामी
4.	क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
5.	मुद्रक का पता	:	प्रज्ञासदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065
6.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ० ललित बिहारी गोस्वामी
7.	क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
8.	प्रकाशक का पता	:	प्रज्ञासदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065
9.	सम्पादक का नाम	:	सविता कुलश्रेष्ठ
10.	क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
11.	सपादक का पता	:	एफ-81 यू०जी०-1, दिलशाद कालोनी, दिल्ली-95
12.	उन व्यक्तियों या ट्रस्ट, सोसायटी का नाम व पता जो समाचार पत्र या पत्रिका के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों।	:	विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान प्रज्ञा सदन, जी०एल०टी०सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065

मैं डॉ० ललित बिहारी गोस्वामी एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार यह विवरण सत्य है।

डॉ० ललित बिहारी गोस्वामी

प्रकाशक

विद्या भारती प्रदीपिका, त्रैमासिक पत्रिका

ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षण विधियाँ

विद्या भारती के चिन्तन अनुसार जब नगरीय व ग्रामीण शिक्षा का अलग-अलग विचार विमर्श हुआ तो ग्रामीण शिक्षा का स्वरूप व शिक्षण विधियाँ विचारणीय विषय था। प्रस्तुत है डॉ. गुज्जरमल्ल वर्मा की लेखनी से

शिक्षण विधि का अभिप्राय: शिक्षण कौशल है। यह सर्वमान्य कि शिक्षण एक कला है, जो शिक्षण कार्य में मुख्य रूप से आचार्य के कौशल, प्रत्युपन्न मति या सूझ-बूझ और कार्य के प्रति निष्ठा आदि पर निर्भर करती है। वह आचार्य ही सफल कहलाता है, जो विषय को विषय के रूप न पढ़ाकर निष्कर्ष के रूप में छात्र को आत्मानुभूति कराता है। शिक्षण विधियों का प्रत्यक्ष सम्बंध आचार्यों या शिक्षण से रहता है। ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षण विधियों को समझने के लिए तीन बिन्दुओं की समग्र जानकारी होना आवश्यक है:-

(1) शिक्षण हेतु आचार्य का दृष्टिकोण
(2) शिक्षण विधियों का मूल स्वरूप
(3) शिक्षण विधियों का क्रियात्मक रूप

(1) आचार्य का दृष्टिकोण -

विषय शिक्षण या कक्षा-कक्ष में अध्यापन से पूर्व आचार्य का मानस चिन्तन अपने कार्य और कर्तव्य के प्रति पूर्ण निष्ठायुक्त होना अनिवार्य है। पाठ्यविषय वस्तु के साथ-साथ आचार्य को विषय के प्रेषण और शिक्षण दिग्दर्शन का व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है। उसमें पाठ्य विषय को विकसित करने की पूर्ण क्षमता होनी चाहिए। आचार्य के लिए स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करने के लिए निम्नलिखित गुण विद्यमान होने चाहिए :-

(क) मात्र पाठ्यक्रम न पढ़ाकर विद्यार्थी को पढ़ना :-विद्यार्थी को पाठ्य विषय वस्तु ने पढ़ाकर निष्कर्ष की अनुभूति कराई जाए। शिक्षण का उद्देश्य कार्य करके सीखना होता है।

(ख) कौशल का विकास:- आचार्य के दृष्टिकोण में तभी व्यापकता का विकास होगा जब अध्यापन कार्य में आचार्य के कौशल का समुचित विकास हो। यह तभी सम्भव है जब आचार्य अपने दृष्टिकोण को अधिक व्यावहारिक बनाएँ।

(ग) **ज्ञान अर्जित करने की कला का जागरण:-** आचार्य शिक्षण तभी सफल कहलाता है जब स्वयं आचार्य स्वाध्याय, अध्यापन, अनुशीलन आदि करता रहे। अपने ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास करना आचार्य का परम कर्तव्य होना चाहिए। विषय को शिक्षण की दृष्टि से विकसित करने के लिए आचार्य को अपने को अधिक परिष्कृत और स्पष्ट करने के लिए ज्ञान अर्जित करने की कला का विकास करना चाहिए। स्वयं अध्ययन करना इसके लिए परमावश्यक है।

(घ) **परिवेश का भरपूर व्यापक उपयोग** -ग्रामीण शिक्षण में आचार्य को परिवेश का ज्ञान होना परमाश्यक है। वही आचार्य सफल होगा जो ग्रामीण परिवेश के अनुरूप अपनी पाठ्य सामग्री विकसित कर तैयार करे, ग्राम की आवश्यक वस्तुओं का समुचित उपयोग उसके कार्य क्षेत्र का विषय होना चाहिए।

(2) शिक्षण विधि का मूल स्वरूप:-

वे सभी शिक्षण पद्धतियाँ जो छात्रों में तर्क तथा चिन्तन शक्ति का विकास करती हैं, दृष्णिकोण को व्यापक बनाती हैं। तथा छात्रों में आवश्यक नागरिक गुणों का विकास कर सकती हैं। शिक्षा के नाम पर विविध विषयों को रटने की शिक्षण पद्धति को समाप्त किया जाना चाहिए। छात्रों को ज्ञान देना नहीं अपितु ज्ञान अर्जित करने की विधियाँ सिखाना है।

(क) आगमन एवं निगमन - उदाहरण दे कर किसी सिद्धांत का निरूपण विद्यार्थियों द्वारा करना ही आगमन विधि है। चतुर्भज की परिभाषा बनाने के पूर्व उसका रूप बनाकर उसके सामान्य गुणों की व्याख्या करनी चाहिए। तत्पश्चात् चतुर्भुज की परिभाषा अपने आप निकल आएगी। इस विधि से शिक्षा देने से बालक भी ऊबता नहीं हैं, साथ अध्यापक को अपने कार्य में सफलता प्रतीत होती है। आगमन विधि का विलोम निगमन विधि है। आगमन विधि में हम विशिष्ट से सामान्य की ओर चलते हैं और निगमन विधि सामान्य से विशिष्ट की ओर। पहले से मान्य सिद्धांत पर किसी बात की सत्यता की परीक्षा करना ही निगमन विधि का कार्य है। एक उदाहरण लेकर इस विधि को भली प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है। बच्चों को पहले ही बता दिया जाता है कि त्रिभुज के तीनों अंत: कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है। इसके पश्चात् त्रिभुज बनाकर उसके कोणों को नापा जाता है। इस प्रकार से निगमन विधि की परीक्षा ली जाती है।

(ख) अवसर प्रदान करना एवं अभ्यास - आचार्य को विषय वस्तु को रोचक और गत्यात्मक बनाने के लिए प्रश्नोत्तर विधि से अधिक से अधिक

जिज्ञासु प्रवृत्ति को विकसित करना चाहिए। विभिन्न अभ्यासों द्वारा उसके अधीति ज्ञान को विकासयुक्त बनाना चाहिए।

(ग) मूल्यांकन अन्तर्निहित : शिक्षण में मूल्यांकन का अर्थ पूर्व निधारित उद्देश्यों के आधार पर छात्रों द्वारा अर्जित अनुभवों की जाँच करना है। इस जाँच के द्वारा हम दो तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, प्रथम तो यह देखते है कि छात्र ने पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को कहाँ तक प्राप्त कर लिया है और द्वितीय यह पता लगाते हैं कि शिक्षण द्वारा छात्रों के अनुभवों में किस सीमा तक परिवर्तन हुए हैं। इस प्रकार शैक्षिक उद्देश्य, सीखने के अनुभव तथा मूल्यांकन तीनों एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित हैं।

(3) शिक्षण विधियों का क्रियात्मक रूप

जो शिक्षण कार्य जितना व्यवहारिक होगा उतना ही सजीव व सुग्राह्य होगा। अध्यापक अपनी शिक्षण विधि को क्रियात्मक रूप से सुन्दर और सरस बना सकता है। शिक्षण विधियों में प्रायोगिक निर्देशन अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(क) विद्यार्थी का सक्रिय सहयोग एवं आदान-प्रदान- शिक्षक-शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक को केवल मार्गदर्शन या सहयोगी की भाँति शिक्षण कार्य में रहना चाहिए। सम्पूर्ण ज्ञान अर्जन में विद्यार्थी को ही पूर्ण अवसर मिलना चाहिए। शिक्षण प्रक्रिया को उद्देश्य-आधारित बनाने के लिए विद्यार्थी को सक्रिय सहयोग एवं आदान-प्रदान उनकी मानसिक क्षमताओं को अधिक विकसित करता है। विद्यार्थी स्वयं अपनी धारणा से निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

(ख) विद्यार्थी के साथ दृश्य-श्रव्य सामग्री का निर्माण- शिक्षण -प्रशिक्षण का उद्देश्य है कि हम शिक्षार्थी-प्रशिक्षार्थी को इस प्रकार शिक्षण-प्रशिक्षण दें कि वह अपना पाठ या काम आसानी से समझ लें, उन्हें सरलता पूर्वक करें और ज्ञानार्जन द्वारा अपनी बुद्धि का चहुँमुखी विकास करें। इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षण-प्रशिक्षण का तरीका इतना आसान, प्रभावकारी एवं रुचिपूर्ण हो कि उसे बोधगम्य करने में कहीं कठिनाई न हो। अपनी शिक्षण विधि में यदि हम दृश्य श्रव्य साधनों को यथोचित स्थान दें तो हमारा शिक्षण प्रशिक्षण और अधिक प्रभावी, ज्ञान सम्मत एवं बोधगम्य हो सकेगा।

(ग) परिस्थितियों के निर्माण द्वारा विश्लेषणात्मक एवं समस्या निदानात्मक प्रक्रिया- शिक्षक का कर्तव्य है कि बालक ने जो कुछ पहले पढ़ा है उसका विश्लेषण करने के पश्चात् आगे पाठ आरम्भ करे। उदाहरणार्थ भूगोल का ज्ञान देने के लिए बालक के वातावरण में तत्सम्बंधी प्राप्त वस्तुओं के विश्लेषण से पाठ प्रारम्भ करना चाहिए, किन्तु विश्लेषण के पश्चात् विभिन्न अंशों को निदानात्मक प्रक्रिया से बालकों के समक्ष रखना चाहिए। तभी वे कुछ समझ सकेंगे। व्याकरण के पाठ में सम्पूर्ण वाक्य विद्यार्थियों के सामने रखकर ही विश्लेषण करना चाहिए।

(घ) सह-पाठ्य क्रियाकलाप- व्यापक आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियों का आयोजन तथा मूल्यांकन करने की निम्नांकित प्रणाली अपनाई जानी चाहिए यथा -

1. साहित्यिक- वाद-विवाद, रचनात्मक, पद्य पाठ(कविता पाठ) चित्रकला।

2. संस्कृति - नाटक, संगीत, नृत्य

3. वैज्ञानिक-विज्ञान पद्धति से, यांत्रिक व व्यवहारिक रूप से।

4. अन्य प्रवृत्तियाँ-खेल-व्यक्तिगत, सामूहिक, दौड़, तैराकी, जिमानास्टिक, पी.टी. बाल शिक्षा, समाजसेवा (एन. एस.एस.) समाजसेवा,प्रश्नमंच, रेडियो समाचार, पत्र क्लबों की स्थापना।

(ङ) कक्षा-नायकों (मॉनिटरों) द्वारा प्रभावी सह अध्यापन- एक अध्यापक या दो अध्यापक विद्यालयों अध्यापन कार्य गतिशील और प्रभावी बनाने के लिए कक्षा के श्रेष्ठ छात्र कक्षा नायक आदि से छोटे-छोटे समूहों के कक्षा-अध्यापन कार्य करवाना अधिक श्रेयस्कर हो सकता हैं। नेतृत्व शक्ति वाले बालक को पहचानना और उन्हें समुचित अवसर देना जिससे नेतृत्व-शक्ति का विकास हो। अध्यापक को खोज के दृष्टिकोण से अध्यापन करना चाहिए।

(च) जीवन मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा को सभी विषयों के साथ जोड़ना- सभी विषयों में जीवन मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा को आध्यात्मिकता के साथ जोड़ना चाहिए। नैतिक शिक्षा आध्यात्मिक संसार की एक सामाजिक परम्परा है, जो छात्रों के जीवन को उदात्त लक्ष्य प्रदान करती है और उन्हें नैतिक आदर्श बनने के लिए प्रेरित करती है। नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों में अपने धर्म संस्कृति के प्रति

ज्ञानयुक्त श्रद्धा, राष्ट्र एवं समाज के प्रति प्रेम एवं सेवा भाव, नि:स्वार्थपरता,

सत्यशीलता, साहस, निर्भरता, परोपकार, सहयोग आदि सद्गुणों का विकास करना चाहिए।

(छ) मौखिक गणित पर जोर- प्राचीन शिक्षा पद्धति में कंठस्थ ज्ञान का बहुत महत्त्व समझा जाता था। श्रुतिज्ञान (वेद शिक्षा) को इसी सिद्धांत पर सिखाया जाता था। मौखिक ज्ञान से छात्र में बुद्धि-दृढ़ता आती है। निर्णय लेने की तीव्र कुशलता का विकास होता है। विद्यार्थी में स्पष्ट दृष्टिकोण का विकास होता है।

(ज) खुली सोच- कक्षा-शिक्षण के बाद छात्र में निष्कर्ष और परिणाम को समझने की खुली सोच का विकास आचार्य का कार्य होना चाहिए। शिक्षक का कार्य पथ-प्रदर्शन करना है जहाँतक हो सके बालकों से कम से कम कहा जाए और किसी सिद्धांत पर स्वयं पहुँचने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाए। इस विधि से बालकों में तार्किक शक्ति का विकास होता है।

(झ) विद्यालय में गृह कार्य- पंचपदी सिद्धांत के प्रसार में बिन्दु को इस प्रकार विकसित करना चाहिए कि छात्र गृह कार्य को विद्यालय में पूर्ण रुचि के साथ कर सके। इससे शिक्षण का मूल्यांकन हाथों-हाथ हो जाता है। विद्यालय के कार्य को पूरा करने तथा विद्यार्थियों के प्राप्त ज्ञान को दृढ़ करने के लिए आवश्यक है।

(ञ) ज्ञानेन्द्रियों तथा कमेन्द्रियों का उपयोग - प्रत्येक विद्यालय को उपयोगितावाद के सिद्धांत पर इस प्रकार बनाना होगा कि छात्र अपने ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्दियों का उपयोग शिक्षा में समझ सके। शिक्षा को ज्ञानेन्द्रिय-विकास के उपयुक्त होना चाहिए।

नाराज़ गूगल

और एक दिन गूगल नाराज़ हो गया,
साज बजते-बजते नासाज़ हो गया।
दौरे गुफ्तगू परवाज़ हो गया,
एक नई सदी का आगाज़ हो गया।।
आलम बेकरारी का बेइन्तहा हो गया,
सब्र का सिलसिला फना हो गया।
मुश्किल में अन्दाज़े बयाँ हो गया,
साँस लेना भी मानो गुनाह हो गया।।
ऐ गूगल बता तुझे क्या हुआ है,
आख़िर तेरे मर्ज की दवा क्या है?
यह तेरा नाज़ो-नखरा क्या है?
बता तो सही यह माजरा क्या है?
ऐ गूगल तुझे कसम है खुदा की,
न रह पाएँगे हम तुझसे जुदा भी
न सोचा कभी तू होगा विदा भी
न जीते, न मरते तेरे बिना कि
तेरे नाजो-नख़रे उठाएँगे हम,
कसम से जान पर खेल जाएँगे हम
तेरी जुदाई न सह पाएँगे हम,
तेरे बिना तो पगला ही जाएँगे हम।
फिर आख़िरकार गूगल यूँ बोला,
गहरा ये राज उसने जो खोला।
मुझे न हुआ कुछ, खुदा के ऐ बन्दे,
हैरान हूँ, कैसे तू नाखुदा हो गया।
मुझे आदमी से बड़ा कर दिया,
इन्सानी रिश्तों को गड़बड़ा कर दिया।
आदमी की जुबां पर ताला जड़ दिया,
ख़ामोशी की दीवार को खड़ा कर दिया।।
तकनीक को इतना बड़ा कर दिया,
आदमी के ही सर पर खड़ा कर दिया।
कभी आदमी था मशीनों का मालिक,
मशीनों को अब सिर-चढ़ा कर दिया।।
सवाल यह टेढ़ा बड़ा कर दिया,
मशीन औ आदमी में झगड़ा कर दिया।
खतरा क्यों इतना बड़ा कर दिया,
बता क्यों मुझे सिर-चढ़ा कर दिया।
कभी बातों से थी खुशनुमा ज़िदगी,
मगर अब तो गूगल से कटती है जी।
चलन बोल का ही विदा कर दिया
रिश्तों का, तंग दायरा कर दिया।।
मज़ा ज़िदगी का गुफ़्तगू में था,
सारा मज़ा किरकिरा कर दिया।
बड़ा ही सही, पर तेरी ईजाद हूँ
क्योंकर यूँ खुद से बड़ा कर दिया।
अगरचे मैं तुझसे बड़ा हो गया,
तो मसला-ए-कुफ़्र खड़ा हो गया।
इंसां खुदा ने बनाया तुझे,
मगर तूने मुझको खुदा कर दिया।
इंसां को तू इंसां ही रहने दे
मशीनों के दिल की रज़ा मत बना।
इक सुहाना सफ़र है ये जिंदगी,
इसको तू लम्बी सज़ा मत बना।
परछाइयों के पीछे भागना छोड़ दे,
इंसानी-रिश्तों को नया मोड़ दे।
आदमी को फिर आदमी से जोड़ दे,
चिंता मशीनों की अब छोड़ दे।
इंसां तू इतना बेग़ैरत न हो,
आदमी को आदमी की ज़रूरत न हो।
तस्वीर इन्सानियत की बदसूरत न हो,
दुनियां का मंज़र खूबसूरत न हो।।
नाराज़ गूगल की ये तज़वीज़,
इसां को दे पाएगी क्या तमीज़??

- इन्दु सुन्दरी गोयल

योग शिक्षा का महत्त्व

– **श्रद्धेय लज्जाराम तोमर**, पूर्व संगठन मंत्री विद्या भारती

विद्या भारती ने जो अखिल भारतीय स्तर पर पाँच विषयों के पाठ्यक्रम लिए हैं उनमें हैं संस्कृत, योग, शारीरिक, संगीत व नैतिक शिक्षा। हम लोगों की इच्छा है कि ये विषय हमारे पूरे देश में विद्या भारती से सम्बंधित विद्यालयों में आधार बनें। योग शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण विषय है। शिक्षा के बारे में जब हम लोग चर्चा करते हैं तो कहते हैं कि शिक्षा का लक्ष्य जो शक्तियाँ, क्षमताएँ हमको मिली हैं उन क्षमताओं व शक्तियों का विकास करना है। वास्तव में यही शिक्षा है। परमेश्वर ने इस मानव शरीर में अनंत शक्तियाँ प्रदान की हैं, परन्तु उन शक्तियों का विकास नहीं होता वे सुप्त पड़ी रह जाती हैं। बहुत ही सौभाग्यशाली व्यक्ति कुछ ही होते हैं जो अपनी शक्तियाँ जागृत करते हैं। और जिनको अवसर मिलता है और दिशा मिलती है। वास्तव में अपने देश का दुर्भाग्य है कि उन शक्तियों के जागरण का जो एक माध्यम है योग जिसके अन्तर्गत उन शक्तियों का जागरण होता है। उसका शिक्षा से कोई सामंजस्य नहीं है, सम्बंध नहीं है।

इसीलिए विद्या भारती की इच्छा है कि हमारी योग शिक्षा का अपनी दैनंदिनी से, जिसको सामान्य शिक्षा कहते हैं, सामंजस्य हो। योग ही उसका आधार हो। सामान्यतः इन शक्तियों को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं, एक क्रिया शक्ति, अर्थात् शारीरिक शक्ति, ज्ञान शक्ति तथा भावना शक्ति। इसे इच्छा शक्ति भी कहते हैं। इन तीनों का विकास करना होगा। शारीरिक शक्ति के माध्यम से हमारी क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं वह शरीर का विकास करती है यद्यपि शारीरिक शिक्षा में हम लोग व्यायाम, खेलकूद भी कराते हैं, परन्तु यह सिद्ध हो चुका है कि खेलकूद व व्यायाम आदि से शरीर के समस्त संस्थानों का व्यायाम नहीं होता पाता। उनमें पुष्टि होती है, शक्तियाँ आती हैं, परन्तु जो संस्थान हैं उसमें इस प्रकार के अनेक अंग–प्रत्यंग हैं जिनका व्यायाम उन खेलकूदों से, उन शारीरिक क्रियाओं से हो ही नहीं पाता। जो हमारे योग आसन हैं जिन पर हमारे यहाँ आग्रह किया जाता है, जिनका हमारे विद्यालयों में प्रचलन भी है उनके द्वारा बच्चों के शरीर के समस्त संस्थानों का व्यायाम होता है। दूसरी बात यह है कि क्रिया पूरे जीवन भर चलती है। खेलकूद या अन्य व्यायाम पूरे जीवन भर नहीं चल सकते। योगासन प्रारम्भ से लेकर जीवन के अंत समय तक चल सकते हैं। उनके द्वारा शरीर का सर्वांगपूर्ण विकास होता है।

योगासन के द्वारा शरीर स्थूल नहीं बनता परन्तु अंदर इतनी शारीरिक क्षमता, जो प्राण शक्ति है उसके माध्यम से उत्पन्न होती है कि इसकी अनन्त शक्ति जाग्रत हो जाती है। योग हमारे सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। जो विश्व में ओलम्पिक आदि खेल होते हैं उनमें शारीरिक शिक्षा द्वारा शारीरिक विकास पर जो एक पुस्तक प्रकाशित हुई है, उनमें सब अंगों के व्यायाम लिखे हैं। अंत में जो हमारा मस्तिष्क है या जो ये अंग है जिसको सिर बोलते हैं इसके लिए व्यायाम हो तो सब सोचने के पश्चात् लिखा गया है कि इसका एक मात्र व्यायाम है जो भारत में योगासन चलते हैं उनमें है ''सर्वांग आसन''। शरीर का रक्त और मस्तिष्क का जो रक्त प्रवाहित होता है इसके द्वारा वह प्रवाह ठीक रहता है तथा शक्ति बढ़ती है कहने का अर्थ है कि योगाभ्यास सम्पूर्ण शरीर का व्यायाम है। उससे सभी शारीरिक शक्तियों का विकास होता है, सब संस्थानों का कार्य ठीक प्रकार से चलता रहता है जीवन भर तक। इसके लिए स्वास्थ्य रक्षा के लिए, शक्तियों के विकास के लिए हमारे योगासन जो सर्वश्रेष्ठ साधन है, इसीलिए हम अपने विद्यालयों के अंदर उसका अधिक आग्रह करते हैं।

दूसरी शक्ति है हमारी ज्ञान शक्ति। हमारी ज्ञान शक्ति या जो ज्ञान है उसका जो माध्यम है वे ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। वे ज्ञान का माध्यम हैं उनको Gateways of knowledge कहते हैं। यह ज्ञानेन्द्रियाँ माध्यम हैं हमारी स्वाद शक्ति, प्राण शक्ति का।

इसके द्वारा हम जो प्राकृतिक है, विश्व है उसका ज्ञान प्राप्त करते हैं। अब इन इन्द्रियों का जो ज्ञान की माध्यम है विकास नहीं हो पाता। योग के माध्यम से उनकी शक्तियों को बढ़ाना होगा। ये बहुत बड़ा उपयोगी काम है। हमारे जो नाड़ी संस्थान, जिसको तंत्रिका तंत्र बोलते हैं उसके माध्यम से इन इन्द्रियों के माध्यम से हम मन के पास पहुँचते हैं। मन उन सारे अनुभवों को विचारों में अनूदित करता है और बुद्धि उसकी

प्रतिक्रिया करती है अर्थात् निर्णय करती है। यह प्रक्रिया ज्ञान की चलती रहती है। इससे मस्तिष्क की अनन्त शक्तियाँ जागृत की जा सकती है। हमारे यहाँ परमेश्वर ने जो शक्ति दी है मस्तिष्क में, उसका हमारे यहाँ उपयोग 1/10 भाग ही उपयोग होता है। आईस्टीन का मस्तिष्क भी केवल 1/4 भाग ही काम कर रहा था जो कि बड़ा विद्वान माना जाता है। हमारी अन्य शक्तियाँ तो सुषुप्त पड़ी रह जाती हैं। जागृत ही नहीं हो पातीं। हमारे यहाँ प्राचीन साहित्य में बुद्धि की अनेक शक्तियों का वर्णन आता है, मेधा आती है, ऋतम्भरा आती है। अनेक प्रतिभाओं का विकास केवल कुछ किताबें पढ़ने से, अभ्यास करने से नहीं होता इनकी शक्तियों का विकास करने से प्रज्ञा, ऋतम्भरा, बुद्धि को शक्ति देती है, मस्तिष्क को जागृत करती हैं। इसका एक मात्र माध्यम योग है।

तीसरी शक्ति है भावना शक्ति

इस भावना शक्ति को हम लोग भी जानते हैं कि इसके जागरण का माध्यम योग है। हमारे अंदर अनेक ग्रंथियाँ हैं व नाड़ी संस्थान हैं, इन नाड़ी संस्थानों और इन ग्रंथियों में जो स्राव होता है वे दोनों ही हमारी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं। इसके कारण से परिणाम भावना का उदय होता है। हमारी इन सारी क्रियाओं के द्वारा आसन, प्राणायाम और ध्यान के द्वारा उन भावनाओं पर नियंत्रण होता है। इन भावनाओं पर नियंत्रण होकर उनका ठीक दिशा में परिष्कार करने को चैनेलाइजेशन कहते हैं। योग में आसन, प्राणायाम और कन्सन्ट्रेशन(जिसे हम ध्यान कहते हैं) माध्यम से शक्तियों का जागरण और इनका विकास और इनका आपस में समन्वय, वास्तव में यही शिक्षा है।

योग विद्या भारत की प्राचीन विद्या है। भारत वर्ष के अंदर वास्तव में इसको जितना प्रयोग-उपयोग होना चाहिए उतना नहीं हो रहा है। आज हमारी यह जो अमूल्य निधि योग विद्या है इसका प्रयोग आज विश्व के अनेक देशों में हो रहा है। हमारे प्रधानाचार्य के मस्तिष्क में जब तक इस विद्या के प्रति रुचि नहीं होगी तबतक योग विद्यालय में नहीं पहुँच सकता। इसलिए योग प्रशिक्षण वर्गो में प्रधानाचार्यो की प्रतिभागिता अनिवार्य होनी चाहिए।

प्राणायाम के लिए जिसको हम ध्यान कहते हैं प्रार्थना का अंग बनाएँ। अपने विद्यालय के अंदर हम ऐसा कक्ष बनाएँ चाहें वह झोंपड़ी ही क्यों न हो जिसको हम योग कक्ष कह सकते हैं। जिससे पता लगे कि प्रधानाचार्य का ध्यान इस विषय पर है।

योग कक्ष में एक बार में एक कक्षा के बालक शांति पूर्वक बैठ सकें। हमको देखने के लिए मिलेगा कि इन बालकों के अंदर हम जो भी चाहते हैं उसको प्राप्त करने में योग बहुत बड़ा साधन बन रहा है। प्रार्थना के कालांश में चाहे पाँच मिनट का हो या दो मिनट का हो या केवल एक मिनट का हो ध्यान को इसका अंग बनाएँ। कहीं-कहीं ॐ ध्वनि का उच्चारण होता है। यह ध्वनि एक ऊर्जा है। इसके उच्चारण से बालक की सारी तंत्रिकाओं में कम्पन होता है जिसके द्वारा अनेक नाड़ी केन्द्रों के जागरण द्वारा शक्तियों का जागरण होता है। इस सब के विकास का अवसर बच्चों को दें। शारीरिक विकास के लिए योगासन, नाड़ी संस्थान, हमारी भावना ग्रंथियों की जागृति शक्ति का माध्यम प्राणायाम है, ध्यान है, ॐ का उच्चारण है। पूरे योग के जो विभिन्न विषय हैं उन विषयों का हम अध्ययन करें और अपने विद्यालय विद्यालय के अंदर इसको अपनाएँ। विद्यालय के वातावरण में योग हमारी सारी शिक्षा की प्रक्रिया का माध्यम बने। हम आश्चर्य चकित हो जाएँगे बालक के अप्रतिम विकास को देखकर जब इस प्रक्रिया के माध्यम से प्रयोग करेंगे।

आगामी अंकों के लिए आमंत्रित रचनाओं हेतु प्रमुख विषय

- आपके द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयोग (समाज परिवर्तन, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, कला, संगीत, खेल, अध्यात्म आदि क्षेत्रों की विभूतियों के जीवन परिचय)
- मौलिक लेख, कविता, कहानी, महान विभूतियों के विनोद प्रसंग, व्यंग्य एवं जीवन प्रसंग।
- नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधान एवं सिद्धांतों पर आधारित लेख एवं जीवन प्रसंग।
- विभिन्न क्षेत्रों में भारत की प्रगति की जानकारी देने वाले लेख एवं विवरण, संस्मरण।
- भारत के गौरवशाली अतीत के अनछुए पहलू व प्रसंग।

भारतीय नारी सम्पूर्ण विश्व की मार्गदर्शिका बनने योग्य है

दिनांक 6 मई 1998, वाशिंगटन डी.सी. (अमेरिका) का इंटरनेशनल ट्रैड सेन्टर का विशाल सभागार अन्तर्राष्ट्रीय महिला-पुरुष प्रतिनिधियों से खचाखच भरा था। मंच पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिलाएँ विराजमान थीं। संगोष्ठी का सञ्चालन भी एक महिला कर रही थी और विषय था ''बालिका शिक्षा के विकास की दशा''।

इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिए भारतीय प्रतिनिधिगण की ओर से विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की प्रतिनिधि थीं सुश्री शरदरेणु दीदी। जो एकाग्रमन से सभी वाद-संवादों को संग्रहित कर रही थीं। आश्चर्य ये था कि 42 राष्ट्रों से आए सरकारी, गैर सरकारी संगठनों बालिका शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिला प्रतिनिधि 70प्रतिशत, तथा पुरुष प्रतिनिधि 30 प्रतिशत थे। ऐसे महिला शिक्षा की पूर्व पीठिका पर गहनता से विचार सम्भव हुआ क्योंकि महिलाएँ स्वयं ही अपनी गुणवत्ता एवं समानता की दिशा में पर्याप्त चिंतन मुखर होकर कर रहीं थीं।

यह विचार गोष्ठी सार्थक विचारों से युक्त थी। प्रायः सभी प्रतिनिधियों ने मान्य किया कि उनके देश में महिलाओं की दुरावस्था है, वे अत्याचार का शिकार बनती हैं। शोषित-उत्पीड़ित होती हैं, उनमें शिक्षा का अभाव है। पुरुष प्रधान समाज के दमन चक्र का निशाना बनती हैं। इसलिए बालिका की उत्तम शिक्षा की व्यवस्था, गुणवत्ता एवं पुरुष से समानता का विचार किया जाना चाहिए।

इस गोष्ठी से यह स्पष्ट हुआ कि विविध देशों में महिला-विकास एवं बालिका शिक्षा की चिन्ता या तो सरकारों ने की या गैरसरकारी संगठनों एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं ने की। लेकिन उसकी गति बहुत धीमी है। गति की तीव्रता बढ़ाने की योजना बनाए जाने पर विचार हुआ। इस दिशा में सभी प्रयत्नशील हैं।

इस गोष्ठी में अनेक देशों के सरकारी, सामाजिक, धार्मिक, प्रतिनिधि यों ने अपनी योजना की सफलता के आयाम विविध माध्यमों से प्रस्तुत किए और भविष्य की रूपरेखा तैयार की गई।

विश्व स्तर के संगठन जैसे यूनीसेफ आदि ने भी अपने कार्यों की मीमांसा की। हम सभी महिला प्रतिनिधि बड़ी प्रसन्न हुई जब विश्व बैंक ने 'गूयना' को बालिकाओं शिक्षा में गुणात्मक विकास हेतु 70 हजार करोड़ डालर देने की घोषणा की। सभी राष्ट्रों की इस विद्वत् परिषद् में महिलाओं ने विश्वस्तरीय 'बालिका शिक्षा के विकास' की योजना बनाने का बार-बार उल्लेख किया। कहने का तात्पर्य यह था कि विश्व स्तर की महिलाओं द्वारा अज्ञानता को दूर करने वाली समस्त गतिविधियों का प्रदर्शन हो रहा था। इस विचारमंथन की महोदधि से कौन कितना साथ बाँध कर ले गया ये तो महिलाएँ स्वयं ही जानती थीं।

परन्तु जब उक्त परिदृश्य में मुझे बार-बार विचार करने हेतु बिन्दु मिला जो वास्तव में बालिका-शिक्षा एवं महिला विकास का सही संदर्भ है-जैसे अमेरिका की तत्कालीन प्रथम महिला हिलेरी क्लिंटन ने अपने वक्तव्य में कहा ''बालिका शिशु की शिक्षा के साथ-साथ युवतियों की शिक्षा पर प्राथमिकता के साथ विचार करना चाहिए।'' युवतियों की शिक्षा-व्यवस्था इस प्रकार की हो कि भावी पीढ़ी उसे योग्य, गुणी, नेतृत्ववान, निर्णयी, कर्तृत्वशीला 'माँ' के रूप में पा सके। वह सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित बनकर परिवार के लिए कठोर परिश्रम करने वाली बनें ।'' कुल मिलाकर इसी प्रकार के विचारों का सम्पादन समस्त चर्चा-सत्रों में परिलक्षित हुआ। स्पष्ट था कि महिला को योग्य शिक्षिका, योग्य माता के रूप में पुनः प्रस्थापित करने वाली शिक्षा आज विश्व को भी आवश्यक लगती है। न्यूयार्क के रामकृष्ण मठ के स्वामी जी ने 'हिन्दुत्व' को प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'यह विश्वमञ्च बालिकाओं एवं महिलाओं की शिक्षा में उसके 'श्रेष्ठ शिक्षिका और माता' के स्वरूप पर विचार आज कर रहा है। हमारे देश कि हिन्दू चिंतन में तो माता की श्रेष्ठ शिक्षा का विचार सर्वदा से होता रहा है।

हमारे यहाँ कहा गया है कि एक बालिका को शिक्षित करना एक व्यक्ति एक परिवार को शिक्षित करना नहीं अपितु कई परिवारों व समाज को शिक्षित करना है। इसलिए योग्य माँ ही बालक एवं देश की भावी पीढ़ी की योग्य शिक्षिका बन सकती है। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के विचारों को अभिव्यक्ति करते हुए कहा कि ''बालिका शिक्षा का विचार करते हुए उसके शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक

सभी प्रकार के सर्वांगीण विकास करने की शिक्षा का विचार भारतीय मनीषियों ने किया जो स्वामी जी की 'शिक्षा' नामक पुस्तक में वर्णित है।

वस्तुतः नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोण भारतीय चिन्तन में पूर्ण विकसित दृष्टिकोण है। वह है 'माता' के भाव से देखने का। इसलिए वेदों में सर्वप्रथम 'मातृदेवो भव' कहा गया तत् पश्चात् पितृदेवो भव व आचार्य देवो भव। न्यूयार्क मठ के स्वामी जी ने इसी को विस्तार देते हुए बताया कि 'मातृदेवो भव' कह कर हमारे देश में माता रूपा नारी की गरिमामयी सृजनात्मक शक्ति का सम्मान किया है। इसलिए हमारे यहाँ नारी पत्नि के रूप में सहधर्मिणी है। अपने विचारों को आत्मविश्वास पूर्ण ओजस्विता से प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि 'एक दिन सम्पूर्ण विश्व को इन्हीं विचार बिंदुओं पर आना पड़ेगा।' उनके इन विचारों को सभी प्रतिनिधियों ने ध्यान से सुना। बहुत सी भारतीय मान्यताओं को वे किसी न किसी रूप में स्वीकार करने की दिशा में बढ़ रहे थे। किसी ने किसी रूप में इसका विरोध नहीं किया कि हिन्दुत्व को प्रस्तुत करने वाले प्रतिनिधि ने ऐसा क्यों कहा।

मेरी नजर में वस्तुतः महिला के प्रति देखने का दृष्टिकोण की बात जिसका सूत्रपात इस गोष्ठी में हुआ। मूलतः 'सहधर्मिणी' एवं मातृभाव के सम्मान से देखने का विचार विश्व करेगा तो नारी स्वयं अपने इस गरिमामयी रूप का प्रस्फुटन करेगी और समेट लेगी समग्र विश्व की विभीषिका को अपने ममतामयी आँचल में, सौंप देगी जगत को आत्मसुख का संसार। यह दृष्टिकोण उसे विस्तारित करना है- शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं, युवतियों, महिलाओं में तथा संसार के माध्यम से बालिका शिशुओं में। इसी दृष्टिकोण पर अवलम्बित 'शिक्षा की योजना' जब विश्व बनाएगा तो उसे सीता, सावित्री, अनुसुइया जैसी तेजस्विनी पत्नियों की व लक्ष्मीबाई, दुर्गाबाई, चेन्नमा जैसी वीरांगनाओं, अपने शील के लिए जौहर करने वाली पद्मिनी, कर्मावती जैसी वीर राजपूत बालाओं की तथा देश के कल्याण के लिए संकल्प सिद्ध यशोदा, अहिल्याबाई, जीजाबाई जैसी माताओं की याद अवश्य ही आयेगी।

इन भारतीय महिलाओं के आदर्श पूर्ण जीवन को देखकर विश्व की नारियाँ जीवंत होंगी। उनका व्यक्तिवादी मैं हम में परिवर्तित होगा। तभी वे व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से गाँव या नगर व राष्ट्र तथा विश्व की हो सकेंगी। विश्व से ब्रह्मांड को जोड़ने की भावात्मक भूमिका में अवतरण हो सकेगा। उनमें विकसित होगा 'विशाल मातृत्व' का भाव। सम्पूर्ण ब्रह्मांड की माता कहलाने-बनाने का दृष्टिकोण। अंतःकरण से गूँजेंगे 'वसुधैव कुटुम्बकम्। यही है विश्व शान्ति का मार्ग जिसे भारतीय नारी प्रशस्त करेगी। आज उसके अतीत के पृष्ठों में नारी सम्बंधी विकसित दृष्टिकोण, आचार, विचार, व्यवहार जीवन लक्ष्य सभी कुछ समाहित है। केवल उन्हें नए संदर्भों में व्यक्त करने की क्षमता चाहिए। अन्यथा नारी के प्रति दृष्टिकोण बदलने के प्रयत्नों में सुरक्षा-कानून, अधिकार, आरक्षण, कितनी भी माँग होती रहेगी पर उस पर होने वाले अत्याचार कभी कम नहीं होंगे। यह हमारे देश में नारी के प्रति श्रद्धा-सम्मान का भारतीय विचार एकमात्र समाज की दिशा बदलने का अवलम्ब है, परन्तु कार्य कठिन है। यह कार्य पुरुष को नहीं, बल्कि स्वयं महिला को करना है। हीनता से मुक्त होकर नारीत्व गुणों का स्वाभिमान लेकर उसे ही दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती रूप में घर-घर, देश-विदेश में अनन्त शक्ति बन प्रादुर्भूत होना है।

- डॉ. शरद रेणु
(अ.भा. पूर्व संयोजिका
बालिका शिक्षा), मथुरा

विद्या भारती प्रदीपिका विज्ञापन दर

विज्ञापन पृष्ठ	विद्याभारती संस्थाएँ	अन्य
आवरण पृष्ठ :		
पृष्ठ 4	15000 रुपए	25000 रुपए
पृष्ठ 2, 3	15000 रुपए	22500 रुपए
पृष्ठ 2, 3 आधा :	8000 रुपए	
मध्य में रंगीन :	12000 रुपए	20000 रुपए
मध्य रंगीन (आधा) :	6000 रुपए	
साधारण पृष्ठ (श्याम-श्वेत) :	10000 रुपए	15000 रुपए
आधा पृष्ठ (श्याम-श्वेत) :	5000 रुपए	

सम्पर्क सूत्र : 011-29840126

शिक्षा द्वारा अखंडता-समर्थता-सम्पन्नता

(अखिल भारतीय वनवासी शिक्षा कार्य गोष्ठी (18-21 अक्टूबर 1986) गुमला (बिहार) में गोष्ठी के समापन कार्यक्रम में श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी द्वारा दिए गए पाथेय का अंश)

वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य

विद्या भारती के तत्त्वावधान में शिक्षा क्षेत्र के सम्बंध में हमने यह बैठक की है। परन्तु मुझे कहने में संकोच नहीं है कि विद्या भारती ने तो बहुत विलंब से इस क्षेत्र में प्रवेश की है। परन्तु जिन्होंने वनवासी क्षेत्र में अपना जीवन समर्पित किया है इस प्रकार के वनवासी क्षेत्र के बारे में केवल थोड़े समय के लिए नहीं, सम्पूर्ण समय देकर चिंतन करते हैं और जिनके परिश्रम से भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का निर्माण हुआ, शिक्षा क्षेत्र कि जितने कार्यकर्ता होने चाहिए वह कल्याण आश्रम के पास नहीं है। दूसरी बात यह है कि उनके पास अनेक प्रकार के काम है, वो भी इसलिए है कि वनवासी क्षेत्र में एक मनोभूमिका बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिस भूमिका के पार्श्वभूमि के ऊपर ही विद्या भारती कार्य कर सकती है। इस प्रकार की मनोवृत्ति का निर्माण करने का महत्त्व कार्य वे कर रहे हैं। वे भी इस गोष्ठी में तीन दिनों से साथ में हैं। उन्होंने आपका मागदर्शन भी किया है। विशेष रूप से श्रीबाला साहेब देशपाण्डे और दूसरे उनके अखिल भारतीय संगठन मंत्री भास्कर राव जी, जो कि केरल में अनेक वर्षों से प्रांत प्रचारक रहे हैं, सब प्रकार के आह्वानों को स्वीकार करते हुए केरल में संघ का कार्य खड़ा किया है। इस देश के अंदर सचमुच जिन्होंने हिन्दु मनोवृत्ति में परिवर्तन किया है, ऐसा यदि संघ की दृष्टि से कोई प्रदेश है तो वह केरल ही है। जिन्होंने स्वयं कार्य करके असम्भव कार्य को सम्भव करके दिखाया, ऐसे वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता अपने बीच आए हैं।

पूर्वांचल में श्री गणेश

कुछ कार्यकर्ता हमने, इस क्षेत्र में विचार करने के लिए लगाए हैं विशेष रूप से आसाम व मणिपुर में। मैं उसी क्षेत्र से प्रवास करके आया हूँ, मैंने उस क्षेत्र के अन्दर अपने बंधुओं ने जिस प्रकार का परिवर्तन किया है, उसे प्रत्यक्ष देखा है। उसका भी यदि श्रेय दिया जाए तो अपने बीच में यहाँ एक कार्यकर्ता श्री कृष्णचंद गाँधी जिन्होंने बिहार के पटना में पूर्वांचल शिशु संगम का आयोजन किया था जिसमें मणिपुर से बालक गण आए थे जो सारे शिशु संगम में अपनी प्रतिभा से छा गए थे। विद्या भारती की ओर से वनवासी क्षेत्र के लिए कार्य के सम्बंध में विचार करना, चिंतन करना उनका मुख्य दायित्व रहेगा। वे कुछ और कार्यकर्ताओं को साथ लेकर अपने इस क्षेत्र हेतु और तैयारी करके इस क्षेत्र में कार्य करेंगे, इस प्रकार का हमारा विचार है।

अतिकेन्द्रित न हों

छोटी-छोटी बातों के लिए केन्द्र से ही सूचना आए, यह जो एक कार्य पद्धति है जिसको अतिकेन्द्रीकरण कहते हैं, इस प्रकार अतिकेन्द्रित न हो। वनवासी क्षेत्र में शिक्षा के सम्बंध में कोई स्वतंत्र केन्द्र बनाने की आवश्यकता है, जो वनवासी क्षेत्र के अन्तर्गत आता हो। अभी तक जो विचार किया है उसमें इस प्रकार का एक केन्द्र राँची हो सकता है। धीरे-धीरे इस प्रकार का एक केन्द्र वनवासी क्षेत्र की शिक्षा के बारे में हम लोग विकसित करेंगे और मागदर्शन जो होगा वह आपको इसी केन्द्र से, इसी क्षेत्र से कुछ वनवासी कल्याण आश्रम के द्वारा होगा। हमारे जो कार्यकर्ता हैं, उनको उनसे मिलकर कुछ न कुछ मार्गदर्शन लेने की जरूरत होगी ऐसा हम विचार कर रहे हैं। कार्य की जो दिशा है वह इस प्रकार की रहेगी ऐसा समझने में कोई हर्ज नहीं है।

परस्पर सहयोग करें

यहाँ और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के बंधुओं के जो प्रयोग चल रहे हैं उनका भी ज्ञान अपने सामने रखने की आवश्यकता है। मैं तो यही आग्रह करूँगा कि वे प्रयोग चालू रखें। अपने प्रयोगों का यदि वे विस्तार कर सकते हैं तो विस्तार अवश्य करें। कार्यक्षेत्र इतना बड़ा है, इतना विशाल है कि हम लोग शक्ति लगाकर जितना काम कर सकते हैं, करें। परिवर्तन जो आएगा, वह हम सबके सामूहिक प्रयास के फलस्वरूप आएगा। किसी को भी इस प्रकार का श्रेय व्यक्तिगत रूप से लेने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे कारण इस क्षेत्र में परिवर्तन हुआ। सब प्रकार की सुविधा प्रदान की जाए ताकि इस क्षेत्र में जितना अधिक कार्य हो सके उतना ही अच्छा है।

प्राचीन व्यवस्था एकाचार्य शाला (Single Teacher School)

परिस्थिति के बारे में मैंने पहले ही कहा है कि कभी अनुकूल हो सकती है, कभी प्रतिकूल। इस समय अनुकूल परिस्थिति है। अँग्रेजी राज से पहले इस देश के अंदर इतनी साक्षरता, इतनी

अच्छी शिक्षा थी उतनी आज नहीं है। सचमुच में अँग्रेजों ने हमारी सारी व्यवस्था को नष्ट करके अपनी शिक्षा पद्धति को लादने का प्रयत्न किया था। एक शिक्षक एक विद्यालय इस प्रकार की कुछ वास्तविक शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल में चल रहीं थी जो छोटे-छोटे गाँवों में थी। कुछ इस प्रकार की पुस्तकें छपी हैं जिससे मानो उस योजना के पुनर्जीवित करने के लिए छोटे-छोटे वनवासी क्षेत्र के अंदर जो ग्राम हैं उनमें एक शिक्षक और छोटा सा विद्यालय की कल्पना को लेकर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

आचार्य कर्म बहुमुखी नेतृत्व

संघ परिवार के होने के कारण हमारी यह अपेक्षा रहती है कि वनवासी क्षेत्र में एक छोटे से विद्यालय का जो शिक्षक है वह उस छोटे से क्षेत्र का सब प्रकार से नेतृत्व भी करे-अध्यापन करने का, स्वयं अध्ययन करने का दायित्व ही उसके ऊपर है। वह शाखा का मुख्य शिक्षक जैसा है। उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिकों से सम्पर्क रखता है। उनकी जो भी आवश्यकताएँ रहती हैं, उसकी वह पूर्ति करने का कार्य भी करता है। इसलिए जो हमारे आचार्यो की शिक्षा होगी, आचार्यो का जो प्रशिक्षण होगा, उससे हम देखेंगे कि कैसा नेतृत्व विकसित हो सकता है, जिससे ग्राम विकसित हों। हमारी शिक्षा पद्धति के अंदर उसका विशेष स्थान होगा।

स्वावलम्बी पुनरोदय

इस प्रकार के आचार्य वनवासी क्षेत्र के ही होंगे। बाहर से कोई व्यक्ति किसी की प्रगति नहीं करवा सकता। इसलिए आचार्य जिनको प्रशिक्षित हमको करना है वे वनवासी बंधु हैं, उन्हीं में से इस प्रकार के योग्य कार्यकर्ता निर्माण होंगे यह हमें पूर्ण विश्वास है। उसकी योजना बनानी होगी, उसको क्रियान्वित करने के लिए जो-जो आवश्यक बातें हैं, वे हम अवश्य ही करेंगे।

पृथकतावादी षड्यंत्र

मैं सब लोगों से केवल एक ही आग्रह करूँगाा कि इस सारे क्षेत्र के अंदर विदेशी मिशनरियों ने (ईसाई मिशनरियों ने) अपनी चालें स्वतंत्र पृथकतावादी क्षेत्र निर्माण करने के लिए हैं, हमारे वनवासी बंधु भोले-भाले हिन्दू हैं। उनको 'तुम हिन्दू नहीं हो' इस प्रकार सोचने को उन्होंने प्रेरित किया है। भिन्न-भिन्न प्रकार से जो एकता के प्रतीक हैं उनको दूर करने का प्रयास किया है। जैसे कि उन्हें आदिवासी कहकर। हम सब षड्यंत्रों से सावधान रहें।, सतर्क रहें उन्होंने जितना प्रलोभन दिया है उन प्रलोभनों से हम दूर रहें। यह सब कार्य करते समय एक दृश्य हमारे सामने हो कि सारे षड्यंत्रों को हमें विफल करना है। राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए विदेशी कुचक्रों को विफल करना है। राष्ट्र की एकता अखंडता के ऊपर ही हमारे देश का भविष्य है। जो भी कोई समाचार और वक्तव्य प्रकाशित करें, उसमें एकता व अखंडता का भाव जागृत होना चाहिए। जिनको समाचार बनाना हो उनके मन में भी एक निश्चित लक्ष्य होना चाहिए; एक निश्चित दृष्टि होनी चाहिए जिससे अखंडता एकता प्रस्थापित हो, जिससे अलगाववाद असफल हो। यदि हम यह काम सही ढंग से करेंगे तो अश्वमेव सफल होंगे।हम सब मिलकर अपने इस क्षेत्र के अंदर अपने उद्देश्यों में सफल होंगे यह मेरा विश्वास है। यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

नहीं रहे देवेन्द्र स्वरूप जी

देह आई ध्येय बनकर

वरिष्ठ पत्रकार- साहित्यकार, पाञ्चजन्य के पूर्व संपादक देवेन्द्र स्वरूप जी 14 जनवरी 2019 को सायं 5.24 पर गोलोकवासी हो गये। 15 जनवरी को सफदरजंग हॉस्पिटल में देहदान। **मन:पूर्वक विनम्र श्रद्धांजलि। ॥ॐ शान्ति:॥**

टोली निर्माण के आचरण के मुख्य सूत्र

1. सम्पर्क, स्नेह तथा संस्कार से संस्कारक्षम वातावरण का निर्माण।
2. न्यूनताओं का नियमों से नहीं स्नेह से दूर करना।
3. पारिवारिकता, एकात्मता तथा परस्परानुकूलता।
4. आदेश तथा उपदेश से नहीं अपितु मन के संदेश से संवाद करना।
5. दबाव से तथा प्रभाव से नहीं अपतिु मधुर स्वभाव से कार्य लेना।
6. संदेश युक्त व्यक्ति से यथा समय, यथा स्थान बातचीत करना।
7. साझेदारी, समझदारी तथा जवाबदारी से मिलजुल कर कार्य करना।
8. सुख-दु:ख सहभागिता सबका गीतनाद होना, प्राचार्य को क्रोध में सुस्त, बधाई में चुस्त तथा निर्णय करने में तन्दुरुस्त होना चाहिए।

दक्षता : स्वावलम्बन का आधार

दक्षता यानि दक्ष तीन व्यञ्जन अक्षरों को मिलाकर बना है। द् और अ, क्ष क्, ष्, अर्थात् द्, क् और ष् इन तीन अक्षरों से दक्ष शब्द का निर्माण होता है। द् यानि दक्षता और क् यानि कुशलता एवं ष् यानि श्रेष्ठता (मजबूती)। वास्तव में दक्ष एक मूल शब्द है क्योंकि दक्षता प्राप्त व्यक्ति ही कुशलता को प्राप्त करता है और कुशलता से व्यक्ति के जीवन में सौष्ठता (मजबूती) आती है।

व्यवहार में दक्षता का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है। प्रथम विद्यालयों में छात्रों से व्यवहार किया जाता है। प्रथम विद्यालयों में छात्रों को व्यवहार में आने वाले सभी तत्त्वों की जानकारी प्रयोगात्मक तरीके से कराकर व द्वितीय अकुशल लोगों को किसी एक तत्त्व में दक्षता प्रदान करके उनके लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर।

वर्तमान में 'भारत सरकार' कौशल विकास योजना के तहत कई प्रकार की स्किल के साथ अकुशल युवाओं को दक्षता प्रदान करने का कार्यक्रम चला रही है। यहाँ पर स्मरणीय तथ्य यह भी है कि दक्षता का प्रयास गैर संस्थागत रूप से भी प्रदान करता है। ड्राइवर विशेषत: ट्रक पर साथ रहने वाले सहयोगियों को धीरे-धीरे ड्राइवर बना ही देता है। सैलून पर कई लोग बाल काटनें की ट्रेनिंग लेते रहते हैं। इसी प्रकार लोहे का काम करने वाले, वे वेल्डिंग की दुकानों पर, ब्युटीपार्लर पर भी छोटे स्तर पर दक्षता प्रदान करते हैं।

ध्यातव्य है कि सभी आई.टी. संस्थान, सभी पालेटेक्निक, सभी आई. टी.आई. एवं सभी अन्य दक्षता प्रदान करने वाले संस्थान अपने-अपने तरीकों से कुशलता प्रदान करने का ही कार्य करते हैं। सभी विद्यालय एंव विश्वविद्यालय अपने-अपने विद्यार्थियों को दक्षता ही तो प्रदान करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन एक प्रकार का ऐसा उद्योग है जो किसी न किसी दक्षता के द्वारा पहचाना जाता है। भले ही यह दक्षता अच्छे वक्ता, अध्यापक, डाक्टर, दुकानदार, टेलर, कारीगर, ड्राईवर, कृषक, विद्वान् इत्यादि ही क्यों न हों। एक अच्छा मजदूर भी अच्छे प्रकार से बात-चीत करके सम्मान को प्राप्त कर लेता है परन्तु मजदूर वास्तव में अपने जीवन रूपी उद्योग में पहचान इसलिए नहीं बना पाता क्योंकि उसकी दक्षता केवल जीवन यापन तक ही है अर्थात् वह अन्य दीर्घ दक्षताधारियों की तुलना में इतनी कम थी कि उसकी कम दक्षता मात्र मजदूर बनने के लायक थी। अब प्रश्न उठता है कि क्या बिना दक्षता के जीवन पहचान लायक नहीं बन सकता?

प्रश्न की प्रासंगिकता उत्तम है वास्तव में जीवन स्वावलम्बन का दूसरा नाम होना चाहिए। बाल्यकाल से ही व्यक्ति आत्म निर्भरता हेतु अग्रसरित होता है। ग्रामीण परिवेश में प्रचलित मान्यता है कि बच्चा जब तक शौच करके खुद अपने पैंट की बटन न बंद कर ले तब तक उसे विद्यालय नहीं भेजना है। उपर्युक्त स्वावलम्बन में हीनता के कारण ही विद्या भारती अपने अनुषंगी संगठन दक्ष भारती के माध्यम से अपने विद्यालयों में पुन: स्वावलम्बन को अपने बच्चों के मानस पटल पर वृद्धिगत करना चाहती है। साथ ही ऐसे अकुशल युवा जिनके पास जीवन रूपी उद्योग को उत्तम बनाने की दक्षता नहीं है। इनको विभिन्न रोजगारपरक विषयों में कुशलता प्राप्त करने का कार्य भी कर रही है। इसे प्रस्तुत आरेख के माध्यम से समझा जा सकता है।

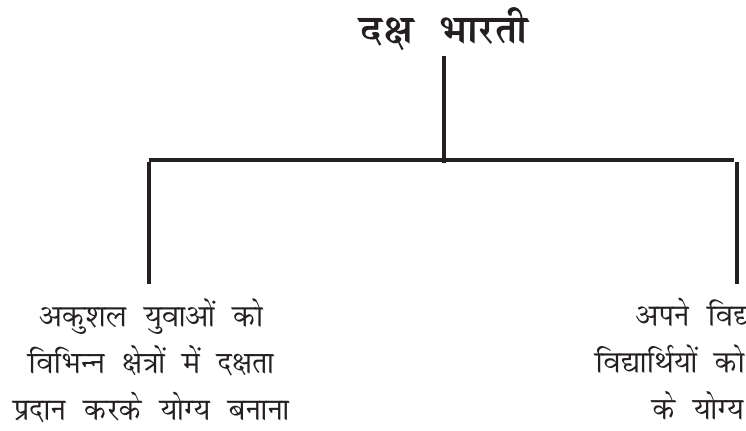

विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यालयों में इसके लिए स्वावलम्बन ही मुख्य प्रयोजन है।

लगभग 30 वर्षों के पूर्व तक हमारे देश की शिक्षा में स्वावलम्बन अनिवार्य विषय हुआ करता था। प्राथमिक से लेकर माध्यमिक व इन्टरमीडिएट तक कृषि, स्काउट, चित्रकला, सिलाई-कढ़ाई, बुनाई आदि विद्यालयों के अनिवार्य विषय हुआ करते थे। परन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य में यह

विषय केवल रोजगार परक शिक्षा के कारण लुप्त हो गया है। बच्चे पश्चिमी सभ्यता के दिखावे में बहक गए हैं। कम ही विद्यार्थी हैं जो आज अपने परिवारजनों को ठीक से सम्मान देते हैं। माता-पिता को इस हेतु अपने बच्चों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्हें स्वयं टेलीविजन, मोबाइल, कम्प्यूटर या अन्य गतिविधियों के स्थान पर स्वयं के बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। परन्तु सत्य यह है कि चाहे कोई भी कारण क्यों न हो बच्चे वर्तमान में स्वावलम्बन से दूर ही हैं। इस हेतु किसी तरह का ऐसा प्रयास हो जो बच्चों को स्वावलम्बी बना सके वह आज किया जाना अपेक्षित है। बिना स्वावलम्बन के आने वाली पीढ़ी केवल पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करने वाली ही बनी रहेगी। वास्तव में ध न के लिए दौड़ अपनी सीमा से आगे जा चुकी है।

दक्ष-भारती इसी हेतु प्रायोगिक स्तर पर दिल्ली में समर्थ शिक्षा समिति के निर्देशन में संचालित विद्यालयों में दक्षता का आयोजन करती है। माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर हरिनगर में यह प्रयोग प्रत्येक माह के अंतिम कार्य दिवस को सुनिश्चित किया गया। वर्ष 2018 के अक्टूबर, नवम्बर व दिसम्बर माह में दक्षता का सफल आयोजन किया गया। इन तीनों कार्य दिवसों पर विद्यार्थियों को अलग-अलग विषयों का प्रशिक्षण दिया गया।

कक्षा प्रथम एवं द्वितीय में बच्चों को स्वच्छता, अच्छा आचरण, रंग पहचानने आदि विषयों पर, कक्षा तृतीय व चतुर्थ में विद्यार्थियों को स्वच्छता एवं पर्यावरण के अलावा वृक्षारोपण, ग्रीटिंग कार्ड बनाना, लघु स्तर पर गणित की व्यावहारिक दक्षता प्रदान की गई। कक्षा पंचम के छात्रों को मोमबत्ती बनाना, दीया में रंगभरना, कागज के लैम्प बनाना, अच्छे से बातचीत करना एवं व्यावहारिक गणित की कुछ विधियों की दक्षता प्रदान की गई। इसी प्रकार कक्षा षष्ठम्, सप्तम् व अष्टम् के छात्रों ने मिट्टी से विभिन्न प्रकार की मूर्तियों के मॉडल, पेटिंग, अच्छा आचरण एवं सेनेटरी नैपकिन इत्यादि के ठीक से प्रयोग की दक्षता प्राप्त की। इसी संदर्भ में व्यवहारिक गणित पर दिसम्बर में हुई कार्यशाला का पूरा समय केन्द्रित किया गया था।

इस प्रकार का आयोजन छात्रों को निश्चित रूप से स्वावलम्बी बनाएगा। शिक्षा पूरी करने के उपरांत विद्यार्थियों को अपनी रुचि के विषय में सेवा देने में आन्तरिक बल मिलेगा। निश्चय ही छात्रों में इस प्रकार के आयोजन से कुण्ठारूपी दानव का प्रकोप नहीं हो पाएगा। छात्र प्रत्येक बात की समझ रखता हुआ अपने जीवन का ठीक प्रकार से यापन कर सकेगा। परिणामत: एक परिपक्व भारत के निर्माण का सपना साकार हो सकेगा।

- शैलेन्द्र विक्रम

दक्ष भारती, हरिनगर, नई दिल्ली

भिगो कर खून से वर्दी,
कहानी कह गए अपनी
मोहब्बत मुल्क की सच्ची
निशानी दे गए अपनी
मनाते रह गए वैलेण्टाइन-डे,
यहाँ हम तुम
वहाँ कश्मीर में सैनिक,
जवानी दे गए अपनी

- मीना शर्मा

सच्चा समर्पण

जब तक मनुष्य किसी भी लक्ष्य को अपने सामने रखकर उसके प्रति पूर्णतया समर्पित हो कर न रहे, तब तक वह उस लक्ष्य तक कभी पहुँच नहीं पाता। जो छात्र प्रतिदिन पाठशाला में तो जाता है, परन्तु न वहाँ मन और बुद्धि अर्थात् पूरा ध्यान, लगा कर शिक्षा प्राप्त करता है, और न ही घर पर पढ़ने-लिखने की ओर पूरा ध्यान देता है उस छात्र की शिक्षा अधूरी रह जाती है। जो मनुष्य अपने जीवन में किसी प्रकार की ज्ञानमयी या द्रव्यमयी सम्पति के सफल स्वामी बन सके हैं, उन सबके अन्दर अपने-अपने लक्ष्य के प्रति पूरी-पूरी लगन देखने में आई है। सफलता रूपी वस्तु संसार के बाजार में बिकाऊ तो है पर इसका मूल्य कोई-कोई ही दे पाता है। वह मूल्य है, अपने आपको पहले अपने द्वारा वारे गए लक्ष्य के हाथ चुपचाप बेच देना। लक्ष्य के साथ अपनी पूरी एक-तानता पैदा कर लेना, उसी के लिए जी और यदि आवश्यकता पड़ जाए तो उसी के ऊपर, दीपक की तरह, अपना बलिदान कर देना ही सच्चा समर्पण है। यही सच्ची भक्ति है। जो साधक ऐसी भक्ति से युक्त हो जाता है वह प्रभु के प्यार का पात्र ही नहीं, वरन् नर होता हुआ भी साक्षात् नारायण बन जाता है। अब वह अपने ही लिए नहीं जीता, वह सभी के लिए जीता है। उसका व्यक्तित्व समष्टि में लीन हो जाता है। उसकी एकता सर्वता में परिणत हो जाती है और वह प्रत्येक प्राणी के प्राणों का प्राण बन जाती है।

www.mitva.in

mitva

Naya Daur - Nayi Raunak

मितवा की बढ़ती रेंज से बढ़ाएं घर की रौनक!

RAL

(निप्पो के को-प्रोमोटर)

प्रस्तुत करते हैं

मितवा

पोर्टेबल सोलर रेंज

- सोलर लाइट
- सोलर लैंटर्न
- सोलर फैन

अब मितवा सोलर रेंज के साथ रौशन करें अपना घर, दुकान, अस्पताल व स्कूल

वितरक या विक्रेता बनके जुड़ें मितवा के सौर ऊर्जा दौर के साथ, अपनी आय को दें नई ऊँचाई, कॉल करें:

1800 1038 222 (सोमवार से शनिवार, 9:30 AM से 6 PM)

RAL

Global brands. Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020
Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

Educational conclave organised by deptt. of HRD Govt. of Gujrat, Bharuch Uni. Avnish Bhatnagar invited for key note

प्रसिद्ध विज्ञानी स्टीफन हॉकिन के सहयोगी रहे डॉ. पंकज जोशी के साथ राष्ट्रीय महामंत्री श्री अवनीश भटनागर

अवनीश जी, डॉ. पंकज जोशी, गुजरात पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष, डॉ. नितिन पैथाणी, डॉ. टी. एस. जोशी शिक्षा निदेशक, गुजरात

अवनीश भटनागर जी अन्य प्रतिभागियों के साथ चर्चा करते हुए

प्रधानाचार्य सम्मेलन- सरस्वती विद्या मंदिर, बहियारा भारती शिक्षा समिति, बिहार

श्रद्धेय रज्जू भैया स्मरण दिवस प्रयाग

अखिल भारतीय प्रशिक्षण टोली बैठक में मंचस्थ अधिकारी

संस्कृत प्रमुखों की अखिल भारतीय गोष्ठी, जबलपुर

अप्रवासी भारतीय सम्मेलन- जालंधर द्वारा
सर्वहितकारी शिक्षा समिति पंजाब

पुलवामा हमले में शहीद हुए अर्धसैनिक बल के
जवानों को श्रद्धांजलि देते हुए अधिकारीगण, जालंधर

बैतूल में जनजातीय क्षेत्र के ग्राम दर्शन कार्यक्रम में
मध्य-भारत प्रांत के भैया व अधिकारी

उत्तर क्षेत्र के आचार्य प्रशिक्षण की कार्यशाला
में श्री रवि जी, सह-संगठन मंत्री हरियाणा

स.वि.मं. केशव नगर महाराजगंज में प्रधानाचार्य सम्मेलन
मंच पर अधिकारी गण

सी.बी.एस.ई. से सम्बन्धित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के
साथ पदमश्री ब्रह्मदेव शर्मा (भाई जी) पटना में

पूर्व छात्र सम्मेलन कटनी में रंगमंचीय कार्यक्रम

प्रयाग में कुंभ दर्शन कार्यक्रम में संस्कार केन्द्रों
के भैया-बहिन

यहाँ गुलाब देकर लोग मोहब्बत जताते रहें!
वहाँ कोई चुपके से जान देकर कर्जदार कर गया!!

शिक्षा जन-जागरण का माध्यम है, राष्ट्रीय शिक्षा के अभाव में राष्ट्र का विकास असंभव है, अतः शिक्षा की समस्या को राष्ट्रीय समस्या समझ कर हमें शिक्षा की ओर कदम बढ़ाना चाहिए

Admission open 2019-2020

शिक्षा भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु वाटिका
समर्थ भारत परामर्श केन्द्र 9219445670
परिसर - श्रीमती ब्रह्मादेवी सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर,
केशवनगर, मोदीनगर मार्ग, हापुड़ - 245101
श्रेष्ठ संतान प्राप्ति हेतु समर्थ भारत परामर्श केन्द्र